साहिर
लुधियानवी

मूल्य 20 00 (बीस रुपये)

प्रथम संस्करण 1981
प्रकाश पंडित 1981

प्रकाशक
सरस्वती विहार
जी० टी० रोड शाहदरा
दिल्ली 110032

SAHIR LUDHIANVI (Poetry) by Prakash Pandit

क्रम

परिचय

'साहिर' को मैंने बहुत करीब से देखा है।

१९४३ ई० म—जब वह 'साहिर' कम और कालेज का विद्यार्थी अधिक था और अपने आपको 'साहिर' यानी शायर मनवाने और अपना कविता सग्रह 'तल्खियां' छपवाने के लिए लुधियाना से लाहौर आया था।

१९४५ ई० म —जब 'तल्खिया' के प्रकाशन के साथ ही उसने ख्याति की कई सीढिया एकदम तय कर ली। प्रसिद्ध उर्दू पत्र 'अदबे लतीफ' और 'शाहकार' (लाहौर) का सम्पादक बना और देवेन्द्र सत्यार्थी ने उससे मेरा बाकायदा परिचय कराया।

१९४८ ई० मे—जब वह ख्याति के शिखर पर पहुच चुका था। बम्बई के फिल्म जगत् से निकलकर शरणार्थी की हैसियत से लाहौर म आबाद था और भारतीय लेखको के एक गैर सरकारी मैत्री मण्डल के सदस्य के रूप म मैं उसके यहा दो दिन रहा था।

लेकिन इन सबके बावजूद 'साहिर' के व्यक्तित्व और उसके आधार पर उसकी शायरी के इस अवलोकन का मुझ अधिकार न पहुचता यदि १९४९ ई० म मेरी उससे भेंट न होती।

दिल्ली मे साहिर स मेरी भेंट आकस्मिक तो थी पर आश्चर्यजनक नही। लाहौर मे उसके यहा दो दिन रहकर ही मैंने अनुमान लगा लिया था कि 'साहिर वहा खुश नही रह सकता। साहिर वहा इसलिए खुश नही रह सकता था क्योकि उसे अपने चारो ओर एक ही मत और धम के लोगो की भरमार नजर आती थी। कलम की आजादी थी न जबान की, और उन मित्रो की जुदाई तो उसके लिए अत्य त असह्य हो रही थी जो अपन

नामो से हिन्दू और सिख थे और जिनके साथ 'साहिर' ने अपना पूरा जीवन व्यतीत किया था, और मैंने देखा था कि साहिर के साथ साथ उसकी माजी को भी हम हिन्दुओं को अपने यहा देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई थी। अतएव दिल्ली में 'साहिर' से जब मेरी भेंट हुई तो मुझे कोई आश्चर्य न हुआ और जब अपने विशेष नटखट स्वर में उसने मुझे बताया कि पाकिस्तान सरकार ने उसके खिलाफ वारण्ट गिरफ्तारी जारी कर दिए हैं तो मैंने कारण तक पूछने की आवश्यकता न समझी। बाद में 'साहिर' की माजी को लाहौर से निकाल लाने के लिए लाहौर जाने पर मुझे मालूम हुआ कि त्रैमासिक पत्रिका 'सवेरा' में, जिसका उन दिनों वह सम्पादक था उसकी कलम ने राज्य के विरुद्ध विष की कुछेक बूंदें टपका दी थी।

दिल्ली साहिर की मंजिल नहीं पड़ाव था। वह शीघ्र से शीघ्र बम्बई पहुचना चाहता था जहा उसके विचार में फिल्म-जगत बड़ी अधीरता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। लेकिन शायद इस ख्याल से कि पथिक पर कुछ अधिकार पड़ाव का भी होता है या न जाने किस खयाल से उसने पूरा एक वर्ष दिल्ली को भेंट कर दिया। और मैं यद्यपि 'साहिर' से उसके बाद भी अनेक बार मिलता रहा हू लेकिन उसे और उसकी शायरी को यथोचित रूप से समझने और जाचने परखने का मौका मुझे उसी एक वर्ष में मिला जब उर्दू पत्रिका 'शाहराह' और 'प्रीतलड़ी' के सम्पादन के सिलसिले में हम दोनों ने न केवल एकसाथ काम किया बल्कि एकसाथ एक ही घर में रहे। यो लगभग चार वर्ष तक मैं बम्बई में भी 'साहिर' के साथ एक ही घर में रह चुका हू और १९७२ में अपने गले के कैसर के इलाज के सिलसिले में महीनों उसका मेहमान रह चुका हू।

'साहिर' अभी अभी सोकर उठा है (प्राय दस ग्यारह बजे से

पहले वह कभी सोकर नहीं उठता) और नियमानुसार अपने लंबे कद की जलेबी बनाए लम्बे लम्बे पीछे को पलटने वाले बाल बिखराए, बड़ी-बड़ी लाल आखो मे किसी भी बिन्दु पर मसमेरिज़्म की सी टकटकी बाधे बैठा है। (इस समय अपनी इस समाधि मे वह किसी प्रकार का विघ्न सहन नहीं कर सकता। यहा तक कि उसकी प्यारी माजी भी, जिनका वह बहुत आदर करता है और अपने जागीरदार पति से विच्छेद के बाद से जिनके जीवन का वह एकमात्र सहारा है, वह भी उसके कमरे मे प्रवेश करने का साहस नहीं कर सकती) कि एकाएक 'साहिर' पर दौरा सा पड़ता है और वह चिल्लाता है "चाय!"

और सुबह की इस आवाज के बाद दिन भर और मौका मिले तो रात भर, वह निरन्तर बोले चला जाता है। आध घण्टे से अधिक किसी जगह टिककर नहीं बैठ सकता और मित्रो परिचितो का जमघटा तो उसके लिए दैवी निधि से कम नहीं। उन्हे वह सिगरेट पर सिगरेट पेश करता है (गला अधिक खराब न हो इस लिए स्वय सिगरेट के दो टुकड़े करके पीता है, लेकिन अक्सर दोनो टुकड़े एकसाथ पी जाता है)। चाय के प्यालो के प्याले उनके गले मे उंडेलता है (स्वय भी दो चार चुस्की लेता है) और इस बीच अपनी नज़्मो गज़लो के अलावा दर्जनो दूसरे शायरो के सैकड़ो शेर, जो उसे अपनी नज़्मो गज़लो ही की तरह जबानी याद हैं बड़ी दिलचस्प भूमिका के साथ सुनाता चला जाता है। अपनी नज़्म गज़लें और दूसरे शायरो का कलाम ही नहीं उसे अपने जीवन की हर छोटी बड़ी घटना याद है। अपने मित्रो और पत्र पत्रिकाओ के सम्पादको के पूरे के पूरे पत्र याद हैं। उसकी शायरी के पक्ष या विपक्ष मे लिखी गई हर पंक्ति याद है। यहा तक कि बाल्यावस्था मे देखी हुई मदन थियेटर की इन्द्र सभा और 'शाहबहराम' नामक फिल्मो के पूरे के पूरे डायलाग

याद हैं।

और मजे की बात यह है कि बात चाहे वह लता मगेशकर की सुरीली आवाज से शुरू करे या मद्रासी दोसे के अजीबो गरीब स्वाद से तान सदा उसके अपने व्यक्तित्व पर टूटती है—लेकिन इस सुन्दर ढग से कि सुनने वाले को अनुभव तक नही होता कि दिलचस्प लतीफों और विचित्र घटनाओ के पर्दे मे जो चीज उसके मस्तिष्क म बिठाई जा रही है वह यह है कि इस काल न यदि उर्दू का कोई महान शायर पैदा किया है तो वह साहिर' है—'साहिर लुधियानवी—जिसके कविता सग्रह 'तल्खिया के उर्दू म इक्कीस और हिन्दी म ग्यारह सस्करण प्रकाशित हो चुके है।

और रात के दस ग्यारह बारह या एक बजे जब उसके मित्र-परिचित दूसरे दिन मिलने का वायदा करके एक क बाद एक उसका साथ छोड जाते हैं और यद्यपि कम मे कम एक धर्मयोद्धा[1] उस समय भी उसके साथ होता, उसे बडे कटु प्रकार का एकाकीपन महसूस होने लगता है और न जाने कहा से उसम 'बोहीमियनिज्म' के ऐसे भयकर कीटाणु घुस आते हैं कि उसे ससार का प्रत्येक व्यक्ति अपने मुकाबले मे तुच्छ बल्कि कीडा मकोडा नजर आने लगता है। उस समय दिन भर का हसमुख और सरल-स्वभाव साहिर' एकदम बदल जाता है। दिन भर की बातें (जिनका उसे एक एक शब्द याद हो चुका होता है) दोहरा दोहराकर वह अपने मित्रो की मूर्खता और आत्मश्लाघा पर

---

१ 'दीवारो के कान तो होते हैं पर जबान नहीं, इसलिए अपनी कभी समाप्त न होने वाली बातें सुनाने और हामी भरवाने के लिए साहिर' एक आध मित्र को स्थायी रूप से अपने साथ रखता है, उसका पूरा खर्च उठाता है और सिवाय 'सुनने के कष्ट' के उसे और कोई कष्ट नहीं होने देता।

जाने देता था। वह अपनी किसी नज़्म की महानता मनवाने के लिए अभी भूमिका ही बाध रहा होता कि मैं अपनी किसी लम्बी-चौडी कहानी का प्लाट सुनाकर चेखव, गोर्की या मोपासा से अपनी तुलना शुरू कर देता। वह लिबास के बारे मे मेरी राय लेता तो बडी गम्भीरता से कपडे छाटकर मैं उसे अच्छा खासा कार्टून बना देता और नाश्ता तो मैंने उसे कई बार आईसक्रीम तक का भी करवाया। लेकिन फिर धीरे-धीरे यह वास्तविकता मुझपर प्रकट होती गई कि वह मजाक का नही, दया का पात्र है। वे आदतें उसने स्वय नही पाली खुदरौ पौधे की तरह खुद-ब-खुद पल गई है और इनकी तह मे काम करती हैं वे दुखद परिस्थितिया, जिनम उसने आख खोली, परवान चढा और जो अपने समस्त गुणा अवगुणा के साथ उसके व्यक्तित्व का अग बन गई।

अब्दुलहयी 'साहिर' १६२१ ई० मे लुधियाना के एक जागीरदार घरान मे पैदा हुआ। माता के अतिरिक्त उसके पिता की कई पत्निया और भी थी। किन्तु एकमात्र लडका होने के कारण उसका पालन पोषण बडे लाड प्यार मे हुआ। मगर अभी वह बच्चा ही था कि सुख वभव के उस जीवन के दरवाज़े एकाएक उसपर ब द हो गए। पति की एयाशियो से तग आकर उसकी माता पति से अलग हो गई और चूकि 'साहिर' ने कचहरी मे पिता पर माता को प्रधानता दी थी, इसलिए उसके बाद पिता से और उसकी जागीर से उनका कोई सम्बन्ध न रहा और इसके साथ ही जीवन की ताबडतोड कठिनाइया और निराशाओ का दौर शुरू हो गया। ऐशो आराम का जीवन छिन तो गया पर अभिलाषा बाकी रही। नौबत माता के ज़ेवरो के बिकने तक आ गई, पर दभ बना रहा और चूकि मुकदमा हारने पर पिता ने यह धमकी दे दी थी कि वह 'साहिर को मरवा डालेगा या कम से-

कम मा के पास न रहने देगा, इसलिए ममता की मारी मा ने रक्षक किस्म के ऐसे लोग 'साहिर' पर तैनात कर दिए जो क्षण-भर को भी उसे अकेला न छोडते थे। इस तरह घणा भाव के साथ साथ उसके मन म एक विचित्र प्रकार का भय भी पनपता रहा। परिणामस्वरूप उसम विभि न मानसिक उलझनें पैदा हो गइ। उसने प्रेम किया और निधनता साहस के अभाव और सामाजिक बधनो के कारण विफल रहा और इसी कारण स कालेज से भी निकाल दिया गया, और फिर इच्छा और स्वभाव के प्रतिकूल उस अपना और अपनी माजी' का पेट पालने के लिए तरह तरह की छोटी मोटी नौकरिया करनी पडी। सिसक सिसक और सुलग सुलगकर उसने दिनो को धक्के दिए। कदम-कदम पर हष और विषाद म सघष हुआ। यह सघष बुद्धि और [illegible] म भी हुआ और जीवन और मत्यु मे भी, और यही वह सघर्ष था जिसने उसे एक साधारण विद्यार्थी से एक[illegible] [illegible] बना दिया, और उसके मन मस्तिष्क की सारी तल्खिया [illegible] पहनकर बाहर निकल पडी।

शायर की हैसियत से 'साहिर' न उस [illegible] जब 'इकबाल' और 'जोश' के बाद 'फिराक' [illegible], [illegible] के नग्मो से न केवल लोग परिचित हो [illegible], [illegible] के मैदान मे इनकी तूती बोलती थी। [illegible] है, कोई भी नया शायर अपने इन [illegible] से प्रभावित हुए बिना नही रह सकता था। [illegible] 'मजाज' और 'फज' का खासा प्रभाव [illegible]। [illegible] उसकी शायरी पर 'फ़ज' के [illegible] हुआ—[illegible]-नाजुक स्वर, वही [illegible] म डूबा हुआ वातावरण। [illegible] आए, उस [illegible]

हुई विचारधारा काम आई, जिसका एक पात्र उसका पिता और दूसरा उसकी प्रेमिका का पिता था, और सासारिक दुखा मे तप कर निकली हुइ चेतना ने उसे माग सुझाया । और लोगो ने देखा कि फेज' या मजाज का अनुकरण करने की बजाय 'साहिर' की रचनाओ पर उसके व्यक्तिगत अनुभवो की छाप है और उसका अपना एक अलग रग भी । यह 'साहिर' की व्यक्तिगत परिस्थितिया ही उससे कहलवा सकती थी कि

> मैं उन अजदाद का[1] बेटा हू जिन्हाने पैहम[2]
> अजनबी कौम के साए की हिमायत की है
> गद्र की साअत नापाक[3] से लेकर अब तक
> हर कडे वक्त म सरकार की खिदमत की है
> न कोई जादा[4], न मजिल, न रोशनी, न सुराग
> भटक रही है खलाओ[5] मे जि दगी मेरी
> इन्ही खलाओ मे रह जाऊगा कभी खोकर
> मैं जानता हू मेरी हमनफस[6] मगर यूही

> कभी कभी मेरे दिल मे खयाल आता है ।
> कि जि दगी तिरी जुल्फा की नम छाआ म
> गुजरने पाती तो शादाब हो भी सकती थी
> य तीरगी[7] जो मिरी जीस्त का[8] मुकद्दर[9] है
> तिरो नजर की शुआओ मे खो भी सकती थी

और मैं समझता हू कि 'साहिर' को जो अपने बहुत मे सम कालीन शायरा से अलग और उच्च स्थान प्राप्त हुआ, उसका बुनियादी कारण उसके यही अनुभव और प्रेक्षण हैं, जिनम किसी प्रकार का मिश्रण करने की बजाय (कलात्मक शृगार के अतिरिक्त) उसने उन्हे ज्यो-का त्या प्रस्तुत किया । प्रेम के दु ख दद

---

१ बुजुर्गों का २ निरतर ३ अपवित्र घडी ४ मार्ग ५ शून्य ६ सहचर ७ अधेरा ८ जीवन का ९ भाग्य

के अलावा समाज के प्रति जो विष तथा कटुता हमे उसकी शायरी म मिलती है, वह मागे तागे की नही, उसके अपने ही जीवन की प्रतिध्वनि है

'साहिर' मौलिक रूप से रोमाटिक शायर है। प्रेम की असफलता ने उसके दिलो दिमाग पर इतनी कडी चोट लगाई कि जीवन की अन्य चिन्ताए पीछे जा पडी। राहो म 'हरीरी मलबूस'[1] देखकर 'सद आहो' मे अपनी प्रेमिका को याद करने के सिवाय उसे कुछ सूझता ही न था। हर समय उसे अपनी आशा पर अपनी प्रेमिका की झुकी हुई पलको का साया महसूस होता और वह तडप-तडपकर उससे पूछने लगता

मेरे ख्वाबो के झरोखो को सजाने वाली
तेरे ख्वाबो मे कही मेरा गुजर है कि नही
पूछकर अपनी निगाहो से बता दे मुझको
मेरी रातो के मुकद्दर मे[2] सहर[3] है कि नही

और

मेरी दरमादा[4] जवानी की तमन्नाओ के
मुजमहिल ख्वाब[5] की ताबीर[6] बता दे मुझको
तेरे दामन मे गुलिस्ता भी हैं वीराने भी
मेरा हासिल मेरी तकदीर बता दे मुझको

और सम्भव है कि आयु-भर अपनी प्रेमिका से वह इसी प्रकार के प्रश्न करता रहता और मुनासिब उत्तर न पाने पर निराशा तथा शोक की घनी और घिनौनी छाव म जा आश्रय लेता और नारी के प्रेम से शुरू होने वाली उसकी शायरी नारी के प्रेम तक ही सीमित रह जाती, लेकिन बार बार प्रश्न करने पर भी जब उसे कोई दो

---

१ रेशमी वस्त्र २ भाग्य मे ३ सुबह ४ विवश ५ दुखद स्वप्न ६ स्वप्नफल

टूक उत्तर न मिला, बल्कि हर उत्तर नये प्रश्न के रूप म स
आने लगा तो इस तकरार स घबराकर उसने सोचने की
डाली। ऐसा क्या हुआ ? ऐसा क्या होता है ? और वह इस
णाम पर आ पहुचा कि एसा नही होना चाहिए। और यो उ
व्यक्तिगत प्रेम विभिन्न मजिलें तय करता हुआ अन्त म उस
पर पहुच गया जहा व्यक्तिगत प्रेम सामूहिक प्रेम म बदल जा
और शायर अपनी प्रेमिका का ही नही, मानव मात्र का आ
बन जाता है और

तुमको खबर नही मगर इक सादा-लौह को
बर्बाद कर दिया तिरे दो दिन के प्यार ने

कहते कहते पहले अपनी प्रमिका से दबी आवाज म कहता है

मैं और तुमसे तर्क-मोहब्बत की[1] आरज़ू
दीवाना कर दिया गमे रोज़गार ने[2]

और फिर बडे स्पष्ट शब्दो म वह उठता है

तुम्हारे गम के सिवा और भी तो गम हैं मुझे
नजात[3] जिनसे म इक लहज़ा[4] पा नही सकता
ये ऊचे-ऊचे मकानो की ड्योढियो के तले
हर एक गाम पे[5] भूके भिकारियो की सदा[6]
ये कारखानो मे लोहे का शोरो गुल जिसम
है दफन लाखो गरीबो की रूह का नग्मा
गली गली मे ये बिकते हुए जवा चेहरे
हसीन आखो मे अफसुर्दगी[7]-सी छाई हुई
ये शोलाबार फज़ाए[8] ये मेरे देश के लोग
खरीदी जाती हैं उठती जवानिया जिनकी

---

१ प्रणय-त्याग की २ सासारिक दु खों ने ३ मु
४ क्षण भर को भी ५ पग पग पर ६ आवाज, पुकार ७ उद
८ आग बरसाता हुआ वातावरण

ये गम बहुत हैं मिरी ज़िन्दगी मिटाने को
उदास रहके मेरे दिल को और रंज न दो
तुम्हार गम के सिवा और भी तो गम है मुझे

और यही पर बस नही, उसकी घायल आत्मा ने ज्यो-ज्यो उसे तड़पाया उसमे इन 'गमो से जूझने, इनपर विजय पाने और इन्ह सुखो मे परिवर्तित करने की जिद सी पैदा हो गई। और अपनी इसी जिद मे उसने उन समस्त विषयो को पकड लेने का प्रयत्न किया जो उसके और इस शताब्दी के समक्ष हैं। यद्यपि कुछेक को शायरी का वैसा सुन्दर लिबास पहनाने म वह इतना सफल नही हुआ, जितना अपने विशेष विषय प्रेम' को और कही कही तो भावावेश म वह अपनी सीमाओ से इतना बाहर निकल गया कि आश्चय होता है, जीवन भर स्वय को शायर मनवाने का प्रयत्न करने वाला 'साहिर क्यो इस बात का आग्रह कर रहा है कि लोग मुझे फनकार न मानें' और जब उसने प्रतिज्ञा की कि

आज से ऐ मजदूर किसानो! मेरे राग तुम्हारे हैं
फाकाकश इन्सानो! मेरे जोग विहाग तुम्हारे हैं

और

आज से मेरे फन का मकसद जजीरें पिघलाना है
आज स मैं शबनम के बदले अगारे बरसाऊगा

तो सन्देह सा हुआ कि क्या सचमुच 'साहिर इतनी कडी प्रतिज्ञा कर रहा है और क्या स्थायी रूप से वह अपनी इस प्रतिज्ञा पर दृढ रह सकेगा? क्या अब वह कभी ऐसे गीत न गाएगा जिनमे

उम्मीद भी थी पसपाई भी
मौत के कदमो की आहट भी, जीवन की अगडाई भी
मुस्तकबिल की किरणें भी थी हाल की बोझल जुल्मत[1] भी
तूफानो का शोर भी था और ख्वाबो की शहनाई भी

---

[1] अधकार

अथात जीवन का एक पहलू ही नही, समस्त रग विद्यमान रहेगे।

सौभाग्य से 'साहिर' उर्दू गज़ल का परम्परागत 'माशूक' सिद्ध होता है और अपने वायदे से फिर जाता है। फिरता नही तो दामन जरूर बचाता है और यहा-वहा दो चार जल्वे दिखाने के बाद वापस अपने बुतखाने या सीमाओ मे लौट आता है। उसे अनुभव हो जाता है कि उसका काम "परचम लहराना"[1] नही 'बरबत पर गाना'[2] है।

'साहिर की शायरी पर बहस करते हुए उर्दू के एक शायर 'कैफी आज़मी' ने जिन्हे कम्युनिस्ट पार्टी के एक ज़िम्मेदार नेता ने उर्दू शायरी का 'सुर्ख फूल' कहा था, साहिर' के बरबत पर गाने और साथी के परचम लहराने पर आक्षेप करते हुए एक स्थान पर लिखा था कि भावना और क्रिया के इसी भेद ने साहिर' के जीवन मे अराजकता और कला मे उदासीनता पैदा कर दी है। इस प्रकार के कुछ और परिणाम भी उन्होने निकाले थे और इस स्वीकारोक्ति के बावजूद कि साहिर' मौलिक रूप से प्रगतिशील और प्रगतिशील शक्तियो का साथी है, उन्होने कुछ इस ढग से 'साहिर को एकसाथ परचम लहराने और बरबत पर गाने का परामर्श दिया था कि मालूम होता था, उनकी नज़र मे बरबत का उतना महत्त्व नही जितना कि परचम का।

परचम का अपना महत्त्व है और बरबत का अपना और इतिहास साक्षी है कि बरबत बजाने वाले हाथो ने जब भावावेश मे आकर या किसी भी कारण से, बरबत के साथ साथ परचम उठाने का प्रयत्न किया तो बरबत भी टूट गया और परचम भी

---

१ झण्डा

२ तुमसे कुव्वत लेकर अब मैं तुमको राह दिखाऊगा
तुम परचम लहराना साथी, मैं बरबत पर गाऊगा

न लहरा सका। और यह तो सुरासुर गलत प्रवृत्ति है कि केवल मजदूरो और किसानो के बारे मे लिखकर ही कोई लेखक अपने आपको प्रगतिशील लेखक कहलवाने का अधिकारी बन जाए। हमारा समाज विभिन्न वर्गो मे विभाजित है और हमारे कलाकार अलग अलग वर्गो से आए हैं। यदि कोई लेखक किसी कारण से अपनी सीमाओ स बाहर नही निकल पाता लेकिन मानसिक रूप से प्रौढ है, तो अपनी सीमाओ मे रहते हुए भी वह स्वस्थ, आदशवादी तथा प्रगतिशील साहित्य की रचना कर सकता है। बूजुवा और ऊचे मध्य वग का लेखक अपने वग की बेअमली और बेराहरवी दर्शाकर उतना ही बडा काय सिद्ध कर सकता है जितना कि वग-सघप मे सीधा योग देने वाला कोई मजदूर या किसान। इसके प्रतिकल अपनी सीमाओ मे रहत हुए यदि कोई कवि या लेखक फैशन के तौर पर, यह जाने बिना कि कपडा बुनने की मशीन के पास मजदूर खडा होकर काम करता है या लेटकर या धान किस ऋतु मे बोया और काटा जाता है और गेहू की बालिया का क्या रग होता है मजदूर और किसान पर कलम उठाएगा तो उसकी रचना म वे 'गुण न आ पाएगे जो अनुभव और प्रेक्षण पर आधारित और अनिवाय रूप से महान साहित्य की नीव होते हैं। सौभाग्य से 'साहिर' सामूहिक रूप से हम वही देता है जो 'तनुबातो हवादिस' की शक्ल मे दुनिया ने उसे दिया।

पिछले सीम वर्षों स 'साहिर' बम्बई म है और 'कैफी आजमी' ही के कथनानुसार आजकल फिल्मी दुनिया पर जितने खतरे मडरा रहे हैं, 'साहिर' उन सबसे शदीद है। मालूम नही, फिल्मी गीत लिखते लिखते वह कब प्रोडयूसर या डायरेक्टर बन जाए (क्योकि आज उसके पास शानदार कारें भी हैं और बगले भी और नज्में लिखना उसने बहुत हद तक छोड दिया है), लेकिन 'कैफी आजमी' ही की तरह जब मैं पहली बार 'साहिर' से मिला

था तो वह केवल शायर था और जब अंतिम बार मिलूगा तो भी वह केवल शायर ही होगा क्योंकि अभी तक अपने पहनने के वस्त्रों का वह स्वयं चुनाव नहीं कर पाता और उसे जितनी अधिक ख्याति प्राप्त हो रही है[1] उससे कहीं अधिक वह यह महसूस कर रहा है कि शायर की हैसियत से उसकी लोकप्रियता कम हो रही है।

अंतिम बार मैं 'साहिर' से १९७८ में तब मिला था जब उसकी माजी का, जो मुझे भी अपना बेटा मानती थीं, देहांत हुआ था और 'साहिर' पर दिल का पहला दौरा पड़ा था और वह फिल्मी गीत लिखने का धंधा छोड़कर आराम और शायरी करने पर विचार कर रहा था

और उसके बारे में अंतिम समाचार मुझे २६ १० ८० की सुबह को साढ़े पांच बजे फोन पर यह मिला कि पिछली शाम दिल का दौरा पड़ने से मेरे प्रिय मित्र का देहांत हो गया है—

खुदा बख्शे बहुत सी खूबियां थीं मरने वाले में ।

प्रकाश पंडित

१ वह पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है उसकी नई पुस्तक 'आओ कि कोई ख्वाब बुनें' पर उसे सोवियत नेहरू एवार्ड उर्दू अकादमी एवार्ड और महाराष्ट्र स्टेट एवार्ड भी प्राप्त हो चुके हैं। भारत पाक युद्ध के दिनों में भारतीय जवानों ने उसके नाम पर एक चौकी का नामकरण किया था तथा उसकी कई कविताओं का अनुवाद अंग्रेजी रूसी, अरबी फारसी, चेक आदि कई विदेशी भाषाओं में छप चुका है।

संकलन

कुछ शाब्दिक सकेत

उर्दू शायरी का भरपूर आनन्द लेने के लिए आवश्यक है कि उर्दू भाषा की शाब्दिक बारीकियों को समझ लिया जाए। पाठको की सुविधा के लिए हम यहा कुछ ऐसे सकेत दे रहे हैं जो न केवल इस पुस्तक को बल्कि उर्दू शायरी की प्रत्येक पुस्तक को पढते हुए पाठको का पथ प्रदशन करें।

१ 'व' अथवा 'तथा' के भावार्थ के लिए उर्दू मे 'ओ' या केवल 'ो की मात्रा से सयुक्त शब्द बनाए जाते हैं, जैसे—ग़म-ओ हसरत या गमो हसरत।

२ '`' की मात्रा के प्रयोग से का के, की आदि का भावार्थ निकलता है जसे—गमे ज़िन्दगी (ज़िन्दगी का गम)।

३ शुद्ध उच्चारण तथा सही अर्थों के लिए कुछ अक्षरो के नीचे बिन्दी डाली जाती है और यो उस अक्षर का स्वर हल्का हो जाता है। जस ज़ेब (सजावट), बिन्दी न डालने से यह 'जेब' हो जाएगा और इसके अर्थ भी बदल जाएगे।

४ उर्दू शायरी के छन्द, लय आदि अलग तरह के हैं जिनके अनुसार, कई शब्दों को पूर्ण रूप से न लिखकर किंचित् बदल लिया जाता है लेकिन उनके अर्थों मे कोई अतर नही आता जैसे

एक को इक	वह को वो	जुनून को जुनू
तेरे को तिरे	खून को खू	खामोशी को खामुशी
मेरे को मिरे	इन्सान को इन्सा	कुर्बान को कुर्बां
यहा को या	सुबह को सुब्ह	गुलिस्तान को गुलिस्तां
वहा को वा	सामान को सामा	बियाबान को बियाबा
पर को पे	दामन को दामा	इत्यादि।
यह को ये	परीशान को परीशा	

इन साधारण सकेतो को ग्रहण कर लेने के बाद बडी आसानी से उर्दू शायरी की आत्मा को छुआ जा सकता है।

●

नज्मे

o

रद्दे-अमल[1]

चन्द कलिया निशात की[2] चुनकर
मुद्दतो महवे - यास[3] रहता हू
तेरा मिलना खुशी की बात सही
तुझ से मिलकर उदास रहता हू

---

१ प्रतिक्रिया २ आनन्द की ३ ग़म मे डूबा हुआ

मता-ए-गैर

मेरे ख्वाबो के झरोखो को सजाने वाली
तेरे ख्वाबो मे कही मेरा गुजर है कि नही
पूछकर अपनी निगाहो से बता दे मुझको
मेरी रातो के मुकद्दर[2] मे सहर[3] है कि नही

चार दिन की ये रफाकत[4] जो रफाकत भी नही
उम्र भर के लिए आजार[5] हुई जाती है
जिन्दगी यू तो हमेशा से परीशान-सी थी
अब तो हर सास गिरा-बार[6] हुई जाती है

मेरी उजडी हुई नीदो के शबिस्तानो मे[7]
तू किसी ख्वाब के पैकर[8] की तरह आई है
कभी अपनी-सी, कभी गैर नजर आती है
कभी इख्लास[9] की मूरत, कभी हरजाई है

प्यार पर बस तो नही है मिरा, लेकिन फिर भी
तू बता दे कि तुझे प्यार करू या न करू
तूने खुद अपने तबस्सुम से[10] जगाया है जिन्हे
उन तमन्नाओ का इजहार[11] करू या न करू

तू किसी और के दामन की कली है, लेकिन
मेरी राते तिरी खुश्बू से बसी रहती हैं
तू कही भी हो तिरे फूल-से आरिज़ की[12] कसम
तेरी पलके मेरी आखो पे झुकी रहती हैं

---

१ गैर की सम्पत्ति २ सुबह ३ प्रभात ४ साथ ५ रोग ६ असह्य, बोझल ७ शयनागारो मे ८ आकार ९ निःस्वार्थता, मैत्री १० मुस्कराहट से ११ प्रकटन १२ गालो की

तेरे हाथो की हरारत[1], तिरे सासो की महक
तैरती रहती है एहसास की[2] पहनाई मे[3]
ढूडती रहती है तखईल की[4] बाह तुझको
सद रातो की सुनगती हुई तन्हाई मे

तेरा अल्ताफो-करम[5] एक हकीकत[6] है, मगर
ये हकीकत भी हकीकत मे फसाना[7] ही न हो
तेरी मानूस निगाहो का[8] ये मोहतात पयाम
दिल के खू करने का इक और बहाना ही न हो

कौन जाने मिरे इमरोज का[9] फर्दा[10] क्या है
कुर्बतें[11] बढके पशेमान[12] भी हो जाती है
दिल के दामन से लिपटती हुई रगी नजरे
देखते देखते अनजान भी हो जाती हैं

मेरी दरमादा[13] जवानी की तमन्नाओ के
मुज़महिल[14] ख्वाब की ता'बीर[15] बता दे मुझको
तेरे दामन मे गुलिस्ता भी है, वीराने भी
मेरा हासिल[16]—मिरी तक्दीर बता दे मुझको

---

१ गर्मी २ अनुभूति की ३ विस्तीणता मे ४ कल्पना की ५ कृपा, अनुकपा ६ वास्तविकता ७ कहानी ८ इष्ट नजरो का ९ आज का १० कल ११ सामीप्य, प्रेम १२ लज्जित १३ विवश १४ शिथिल १५ स्वप्न फल १६ प्राप्ति

एक मजर

उफक के[1] दरीचे से किरनो ने झाका
फजा[2] तन गई रास्ते मुस्कराए
सिमटने लगी नम कुहरे की चादर
जवा शाखसारो ने[3] घूघट उठाए
परिन्दो की आवाज से खेत चौके
पुर-असरार[4] लय मे रहट गुनगुनाए
हसी शबनम-आलूद[5] पगडडियो से
लिपटने लगे सब्ज पेडो के साए
वो दूर एक टीले पे आचल-सा झलका
तसव्वुर मे लाखो दिए झिलमिलाए

---

१ क्षितिज के २ वातावरण ३ जवान शाखाओ ने
४ रहस्यपूण ५ सुदर तथा ओस भरी ६ कल्पना मे

एक वाकिया

अधियारी रात के आगन मे ये सुब्ह के कदमो की आहट
ये भीगी-भीगी सद हवा, ये हल्की-हल्की धुदलाहट

गाडी मे हू तन्हा मह् वे-सफर[1] और नीद नही है आखो मे
भूले-बिसरे रूमानो के ख्वाबो की जमी है आखो मे

अगले दिन हाथ हिलाते है, पिछली पीते याद आती है
गुमगश्ता[2] खुशिया आखो मे आसू बनकर लहराती है

सीने के वीरा गोशे मे इक टीस-सी करवट लेती है
नाकाम उमगें रोती है उम्मीद सहारे देती है

वो राहे जिह्न मे[3] घूमती है जिन राहो से आज आया हू
कितनी उम्मीद से पहुचा था, कितनी मायसी लाया हू

---

१ यात्रा मग्न २ खोई हुई ३ मस्तिष्क म

शहकार[1]

मुसव्विर[2] ! मैं तिरा शहकार वापस करने आया हूं

अब इन रंगीन रुख़सारों में[3] थोड़ी ज़र्दियां भर दे
हिजाब-आलूद[4] नज़रों में ज़रा बेबाकियां भर दे

लबों की[5] भीगी-भीगी सलवटों को मुज़महिल[6] कर दे
नुमायां रंगे-पेशानी प[7] अक्से-सोज़े दिल[8] कर दे

तबस्सुम-आफ़रीं[9] चेहरे में कुछ संजीदापन भर दे
जवां सीने की मख़रूती[10] उठानें सरनिगूं[11] कर दे

घने बालों को कम कर दे मगर रख़्शांदगी[12] दे दे
नज़र से तम्कनत[13] लेकर मज़ाक़-आजिज़ी[14] दे दे

मगर हां बेंच के बदले इसे सोफ़े पे बिठला दे
यहां मेरी बजाए—इक चमकती कार दिखला दे

---

१ महान कलाकृति २ चित्रकार ३ कपोलों में ४ लज्जा-शील ५ होंठों की ६ शिथिल ७ माथे के रंग पर ८ हृदय की जलन का प्रतिबिम्ब ९ मुस्कराते १० गोल तथा नुकीली ११ झुकी हुई १२ चमक १३ अभिमान १४ विनयशीलता

खाना-आबादी

(एक दोस्त की शादी पर)

तराने गूंज उट्ठे हैं फ़ज़ा में शादियानों के
हवा है इत्र-आगीं[1], ज़र्रा-ज़र्रा मुस्कराता है

मगर दूर—एक अफ़सुर्दा[2] मकां में सर्द बिस्तर पर
कोई दिल है कि हर आहट पे यूंही चौंक जाता है

मिरी आंखों में आंसू आ गए 'नादीदा' आंखों के[3]
मिरे दिल में कोई ग़मगीन नग्मा सरसराता है

ये रस्मे-इन्क़िताए-अह्दे-उल्फ़त[4], ये हयाते-नौ[5]
मोहब्बत रो रही है, और तमद्दुन[6] मुस्कराता है

ये शादी खाना-आबादी हो, मेरे मोहतरिम[7] भाई!
'मुबारक' कह नहीं सकता, मिरा दिल कांप जाता है

१ सुगंधित २ उदास ३ अनदेखी आंखों के ४ प्रेम काल की समाप्ति की रीति ५ नवजीवन ६ संस्कृति ७ आदरणीय

शिकस्त

अपने सीने से लगाए हुए उम्मीद की लाश
मुद्दतो जीस्त को[1] नाशाद[2] किया है मैंने
तूने तो एक ही सदमे से किया था दो-चार
दिल को हर तरह से बर्बाद किया है मैंने
जब भी राहो मे नज़र आए हरीरी मलबूस[3]
सर्द आहो मे तुझे याद किया है मैंने

और अब जबकि मिरी रूह की पहनाई मे[4]
एक सुनसान-सी मग्मूम[5] घटा छाई है
तू दमकते हुए आरिज की[6] शुआए[7] लेकर
गुलशुदा[8] शम्ए जलाने को चली आई है

मेरी महबूब, ये हगामा-ए-तजदीदे-वफ़ा[9]
मेरी अफसुर्दा[10] जवानी के लिए रास नही
मैंने जो फूल चुने थे तिरे कदमो के लिए
उनका धुंदला-सा तसव्वुर[11] भी मिरे पास नही

एक यखबस्ता[12] उदासी है दिलो-जा पे मुहीत[13]
अब मिरी रूह मे बाक़ी है न उम्मीद न जोश

---

१ जीवन का २ खिन्न ३ रेशमी लिबास ४ आत्मा की विस्तीणता मे ५ दुखी ६ कपोलो की ७ रश्मिया ८ बुझी हुई ९ प्रेम के नवीकरण का हगामा १० उदास बुझी हुई ११ कल्पना १२ बर्फ की तरह जमी हुई १३ छाई हुई

रह गया दब के गिरांबार सलासिल के[1] तले
मेरी दरमांदा[2] जवानी की उमंगों का खरोश[3]

रेगज़ारों में[4] बगूलों के सिवा कुछ भी नहीं
साया-ए-अब्रे-गुरेज़ां से[5] मुझे क्या लेना
बुझ चुके हैं मिरे सीने में मोहब्बत के कंवल
अब तिरे हुस्ने-पशेमां से[6] मुझे क्या लेना

तेरे आरिज़ पे ये ढलके हुए सीमीं[7] आंसू
मेरी अफ़सुर्दगी-ए-ग़म का[8] मुदावा[9] तो नहीं
तेरी महजूब निगाहों का[10] पयामे-तजदीद[11]
इक तलाफ़ी[12] ही सही, मेरी तमन्ना तो नहीं

---

१ बोझल ज़ंजीरों के २ विवश ३ जोश ४ मरुस्थलों में ५ भागते हुए बादल की छाया से ६ लज्जित सौंदर्य से ७ रजत ८ ग़म की उदासी का ९ इलाज १० लज्जित नज़रों का ११ नवीकरण संदेश १२ क्षतिपूर्ति

किसीको उदास देखकर

तुम्हें उदास-सी पाता हूँ मैं कई दिन से
न जाने कौन से सदमे उठा रही हो तुम
वो शोखियां, वो तबस्सुम, वो कहकहे न रहे
हर एक चीज को हसरत से देखती हो तुम
छुपा-छुपा के खामोशी में अपनी बेचैनी
खुद अपने राज की तशहीर[1] बन गई हो तुम

मिरी उमीद अगर मिट गई तो मिटने दो
उमीद क्या है बस इक पेशो-पस[2] है कुछ भी नहीं
मिरी हयात की गमगीनियों का गम न करो
गमे-हयात[3] गमे-यक-नफस[4] है कुछ भी नहीं
तुम अपने हुस्न की रा'नाइयों पे[5] रहम करो
वफा फरेब है, तूले-हवस[6] है कुछ भी नहीं

मुझे तुम्हारे तगाफुल से[7] क्यों शिकायत हो
मिरी फना[8] मिरे एहसास का[9] तकाजा है
मैं जानता हूँ कि दुनिया का खौफ है तुमको
मुझे खबर है, ये दुनिया अजीब दुनिया है
यहां हयात के पर्दे में मौत पलती है
शिकस्ते साज की[10] आवाज रूहे नग्मा है

---

१ विज्ञापन २ दुविधा ३ जीवन का गम ४ क्षण भर क
गम (एक श्वास से संबंधित) ५ रमणीयताओं पर ६ लोलुप
का विस्तार ७ उपेक्षा से ८ नाश ९ अनुभूति का १० सा
के टूटने की

मुझे तुम्हारी जुदाई का कोई रंज नहीं
मिरे ख़याल की दुनिया में मेरे पास हो तुम
ये तुमने ठीक कहा है, तुम्हें मिला न करूँ
मगर मुझे ये तो बता दो कि क्या उदास हो तुम
ख़फ़ा न होना मिरी जुरअते-तख़ातुब पर[1]
तुम्हें ख़बर है मिरी ज़िन्दगी की आस हो तुम

मिरा तो कुछ भी नहीं है मैं रो के जी लूंगा
मगर ख़ुदा के लिए तुम असीरे-ग़म[2] न रहो
हुआ ही क्या जो ज़माने ने तुमको छीन लिया
यहां पे कौन हुआ है किसी का, सोचो तो
मुझे क़सम है मिरी दुख भरी जवानी की
मैं ख़ुश हूं मेरी मोहब्बत के फूल ठुकरा दो

मैं अपनी रूह की हर इक ख़ुशी मिटा लूंगा
मगर तुम्हारी मसरत मिटा नहीं सकता
मैं ख़ुद को मौत के हाथों में सौंप सकता हूं
मगर ये बारे मसाइब[3] उठा नहीं सकता
तुम्हारे ग़म के सिवा और भी तो ग़म हैं मुझे
नजात[4] जिनसे मैं इक लहज़ा[5] पा नहीं सकता

---

१ सम्बोधन के दु साहस पर २ शोक ग्रस्त ३ मुसीबतों का बोझ ४ मुक्ति ५ क्षण भर के लिए

ये ऊँचे-ऊँचे मकानों की ड्योढ़ियों के तले
हर एक गाम पे[1] भूके भिखारियों की सदा[2]
हर एक घर में ये इफ्लास और भूक का शोर
हर एक सम्त[3] ये इन्सानियत की आहो बुका[4]
ये कारखानों में लोहे का शोरो-गुल जिसमें
है दफ्न लाखों गरीबों की रूह का नग्मा

ये शाहराहों पे[5] रंगीन सारियों की झलक
ये झोंपड़ों में गरीबों के बेकफ़न लाशें
ये माल रोड पे कारों की रेलपेल का शोर
ये पटरियों पे गरीबों के जर्द-रू[6] बच्चे

गली-गली में ये बिकते हुए जवां चेहरे
हसीन आंखों में अफ़सुर्दगी-सी[7] छाई हुई
ये जंग और ये मेरे वतन के शोख जवां
खरीदी जाती है उठती जवानियां जिनकी
ये बात-बात पे कानूनो-जाब्ते की गिरफ्त[8]
ये ज़िल्लत, ये गुलामी, ये दौरे-मजबूरी

ये गम बहुत है मिरी ज़िन्दगी मिटाने को
उदास रहके मिरे दिल को और रंज न दो

---

१ कदम पर २ आवाज ३ ओर ४ आर्तनाद ५ राज-पथों पर ६ पीले चेहरे वाले ७ उदासी-सी ८ पकड़

फनकार[1]

मैंने जो गीत तिरे प्यार की ख़ातिर लिक्खे
आज उन गीतों को बाज़ार मे ले आया हू

आज दुक्कान पे नीलाम उठेगा उनका
तूने जिन गीतों पे रक्खी थी मोहब्बत की असास[2]
आज चादी के तराज़ू मे तुलेगी हर चीज
मेरे अफकार[3], मिरी शायरी, मिरा एहसास

जो तिरी जात से मन्सूब थे[4] उन गीतों को
मुफलिसी जिन्स[5] बनाने पे उतर आई है
भूक, तेरे रुखे-रगी के[6] फसानो के इवज
चन्द अशिया-ए-ज़रूरत की[7] तमन्नाई है

देख इस अर्सागहे-मेहनतो-सर्माया[8] मे
मेरे नग्मे भी मिरे पास नहीं रह सकते
तेरे जलवे किसी जरदार[9] की मीरास सही
तेरे खाके[10] भी मिरे पास नहीं रह सकते

आज उन गीतों को बाज़ार मे ले आया हू
मैंने जो गीत तिरे प्यार की खातिर लिक्खे

---

१ कलाकार २ नीव ३ रचनाए ४ सम्बधित थे ५ खाद्य-पदाथ ६ रगीन चेहरे के ७ ज़रूरत की चीज़ो की ८ मेहनत और पूजी के युद्ध क्षेत्र म ९ पूजीपति १० रेखाचित्र

सोचता हू

सोचता हू कि मोहब्बत से किनारा कर लू
दिल को बेगाना ए तरगीबो तमन्ना[1] कर लू

सोचता हू कि मोहब्बत है जुनूने-रुसवा[2]
चद बेकार-से बेहूदा खयालो का हुजूम
एक आजाद को पाबद बनाने की हवस
एक बेगाने को अपनाने की सअइ ए-मौहूम[3]

सोचता हू कि मोहब्बत है सरूरो-मस्ती
इसकी तन्वीर से[4] रौशन है फज़ाए-हस्ती[5]

सोचता हू कि मोहब्बत है बशर की फितरत[6]
इसका मिट जाना, मिटा देना बहुत मुश्किल है
सोचता हू कि मोहब्बत से है ताबिंदा[7] हयात[8]
आप ये शम्अ बुझा देना बहुत मुश्किल है।

सोचता हू कि मोहब्बत पे कडी शर्तें है
इस तमद्दुन मे[9] मसर्रत पे बडी शर्तें है

सोचता हू कि मोहब्बत है इक अफसुर्दा[10]-सी लाश
चादरे इज्जतो - नामूस मे[11] कफनाई हुई

---

१ अभिलाषा तथा प्रेरणारहित २ बदनाम उन्माद
३ भ्रमात्मक प्रयत्न ४ प्रकाश से ५ जीवन रूपी वातावरण
६ मानव स्वभाव ७ दीप्त ८ जीवन ९ संस्कृति मे १० उदास
११ इज्जत रूपी चादर मे

दौरे-सरमाया[1] की रौंदी हुई रुसवा हस्ती
दरगहे-मजहबो-इख्लाक से[2] ठुकराई हुई

सोचता हू कि बशर[3] और मोहब्बत का जुनू
ऐसे बोसादा तमद्दुन मे है इक कारे-ज़बू[4]

सोचता हूँ कि मोहब्बत न बचेगी जिंदा
पेश-अज-वक्त कि[5] सड जाए ये गलती हुई लाश
यही बेहतर है कि बेगाना-ए-उल्फत होकर[6]
अपने सीने मे करू जज्बए-नफरत की[7] तलाश

और सौदा-ए-मोहब्बत[8] से किनारा कर लू
दिल को बेगानए तरगीबो-तमन्ना कर लू

---

१ पूजी (के आधिपत्य) के युग २ धम तथा नैतिकता की कचहरी से ३ मनुष्य ४ बुरा काय ५ इससे पूव कि ६ प्रेम से विमुख होकर ७ घणा भाव की ८ प्रेमोन्माद

मुझे सोचने दे।

मेरी नाकाम मोहब्बत की कहानी मत छेड़
अपनी मायूस उमंगों का फ़साना न सुना
ज़िन्दगी तल्ख़ सही, ज़हर सही, सम[१] ही सही
दर्दो-आज़ार[२] सही, जब्र सही, ग़म ही सही
लेकिन इस दर्दो-ग़मो-जब्र[३] की वुस्अत[४] को तो देख
ज़ुल्म की छाओं में दम तोड़ती ख़िलक़त को तो देख
अपनी मायूस उमंगों का फ़साना न सुना
मेरी नाकाम मोहब्बत की कहानी मत छेड़

जल्सागाहों में ये दहशत-ज़दा[५] सहमे अंबोह[६]
रहगुज़ारों पे फ़लाकत-ज़दा[७] लोगों के गिरोह
भूक और प्यास से पज़मुर्दा[८] सियहफ़ाम[९] ज़मीं
तीरा-ओ-तार[१०] मकाँ मुफ़लिसो-बीमार मकीं[११]
नौए-इन्सां में[१२] ये सरमाया-ओ-मेहनत[१३] का तज़ाद[१४]
अम्नो-तहज़ीब के परचम तले क़ौमों का फ़साद
हर तरफ़ आतशो-आहन का[१५] ये सैलाबे-अज़ीम[१६]
नित नए तर्ज़ पे होती हुई दुनिया तक़सीम

---

१ विष २ पीड़ा तथा रोग ३ दर्द, ग़म, अत्याचार ४ विशालता ५ आतंकित ६ जन-समूह ७ निर्धनता के मारे हुए ८ म्लान ९ काली १० तंग तथा अँधेरे ११ वासी १२ मनुष्य में १३ पूँजी तथा श्रम १४ प्रतिकूलता १५ आग और लोहे का १६ महान बाढ़

लहलहाते हुए खेतों प जवानी का समा
और दहकान[1] के छप्पर में न बत्ती न धुआं
य फलक-बोस[2] मिलें, दिलकशी सीमीं[3] बाजार
य गलाज़त[4] प झपटते हुए भूके नादार
दूर साहिल प वो शफ्फाफ[5] मकानों की कतार
सरसराते हुए पर्दों में सिमटते गुलज़ार[6]
दरो-दीवार पे अनवार का[7] सैलाबे-रवां[8]
जैसे इक शायरे मदहोश[9] के ख्वाबों का जहां
य समा क्या है? ये क्या है? मुझे कुछ सोचने दे
कौन इंसा का खुदा है, मुझे कुछ सोचने दे
अपनी मायूस उमंगों का फसाना न सुना
मेरी नाकाम मोहब्बत की कहानी मत छेड़

---

१ किसान २ गगनचुम्बी ३ सुन्दर तथा रजत ४ गन्दगी ५ उज्ज्वल ६ पुष्प वाटिकाएं ७ प्रकाश का ८ बहती बाढ़ ९ मस्त शायर

चकले

ये कूचे ये नीलामघर दिलकशी के
ये लुटते हुए कारवा ज़िन्दगी के
कहा है ? कहा है मुहाफिज खुदी[1] के
सना-ख्वाने-तक्दीसे मशरिक[2] कहा है ?

ये पुरपेज गलिया ये बेख्वाब[3] बाजार
ये गुमनाम राही, ये सिक्को की झनकार
ये इस्मत[4] के सौदे, ये सौदो पे तकरार
सना-ख्वाने तक्दीसे मश्रिक कहा हैं ?

ये सदियो मे बेख्वाब[5] सहमी-सी गलिया
ये मसली हुई अधखिली ज़र्द कलिया
ये बिकती हुई खोखली रग-रलिया
सना ख्वाने-तक्दीसे-मश्रिक कहा हैं ?

वो उजले दरीचो मे पायल की छन-छन
तनफ्फुस[6] की उलझन पे तबले की धन धन
ये बेरूह कमरो मे खासी की ठन-ठन
सना ख्वाने-तक्दीसे-मश्रिक कहा है ?

ये गूजे हुए कहकहे रास्तो पर
ये चारो तरफ भीड सी खिडकियो पर
ये आवाजे खिचते हुए आचलो पर
सना-ख्वाने-तक्दीसे-मश्रिक कहा है ?

---

१ अहं या आत्मसम्मान के रक्षक २ पूर्व की पवित्रता के गुण गाने वाले ३ निद्रारहित ४ सतीत्व ५ जागी हुई ६ श्वास

ये फूलों के गजरे, ये पीकों के छींटे
ये बेबाक नजरें, ये गुस्ताख फिकरे
ये ढलके बदन और ये मदकूक चेहरे
सना-ख्वाने-तक्दीसे-मशरिक कहां हैं ?

ये भूकी निगाहें हसीनों की जानिब
ये बढ़ते हुए हाथ सीनों की जानिब
लपकते हुए पांव ज़ीनों की जानिब
सना-ख्वाने-तक्दीसे-मशरिक कहां हैं ?

यहां पीर[2] भी आ चुके हैं जवां भी
तनोमंद[3] बेटे भी अब्बा मियां भी
ये बीवी भी है और बहन भी है, मां भी
सना-ख्वाने-तक्दीसे-मशरिक कहां हैं ?

मदद चाहती है ये हव्वा की बेटी
यशोदा की हमजिन्स, राधा की बेटी
पैयम्बर की उम्मत[4], ज़ुलैखा की बेटी
सना-ख्वाने-तक्दीसे-मशरिक कहां हैं ?

ज़रा मुल्क के रहबरों को बुलाओ
ये कूचे, ये गलियां ये मंज़र दिखाओ
सना-ख्वाने-तक्दीसे-मशरिक को लाओ
सना-ख्वाने-तक्दीसे-मशरिक कहां हैं ?

ताजमहल

ताज तेरे लिए इक मज़्हरे-उल्फत[1] ही सही
तुमको इस वादिए रंगी[2] से अकीदत[3] ही सही
मेरी महबूब ![4] कहीं और मिला कर मुझसे

बज़्मे-शाही में[5] गरीबों की गुज़र, क्या मानी?
सब्त[6] जिस राह पे हो सतवते-शाही के[7] निशां
उस पे उल्फत भरी रूहों का[8] सफर क्या मानी

मेरी महबूब पसे-पर्दाए तशहीरे-वफा[9]
तूने सत्वत[10] के निशानों को तो देखा होता
मुर्दा शाहों के मकाबिर से[11] बहलने वाली !
अपने तारीक[12] मकानों को तो देखा होता

अनगिनत लोगों ने दुनिया में मोहब्बत की है
कौन कहता है कि सादिक[13] न थे जज़्बे उनके ?
लेकिन उनके लिए तशहीर[14] का सामान नहीं
क्योंकि वो लोग भी अपनी ही तरह मुफलिस थे

---

१ प्रणय स्थल २ रमणीय स्थान ३ श्रद्धा ४ प्रेयसी ५ शाही दरबार में ६ अंकित ७ शाही वैभव के ८ आत्माओं का (प्रेमियों का) ९ वफा के विज्ञापन रूपी पर्दे के पीछे १० वैभव ११ मकबरों से १२ अंधकारपूर्ण १३ सच्चे १४ विज्ञापन १५ निधन

ये इमारातो-मकाबिर[1], ये फसीले, ये हिसार
मुताक-उल्हुक्म[3] शहनशाहो की अजमत[4] के सतू[5]
दामने-दह्र पे[6] उस रग की गुलकारी[7] है
जिसमे शामिल है तिरे और मिरे अजदाद[8] का खू[9]

मेरी महबूब ! उन्हे भी तो मोहब्बत होगी
जिनकी सन्नाई ने[10] बख्शी है[11] इसे शक्ले-जमील[12]
उनके प्यारो के मकाबिर रहे बेनामो-नुमूद[13]
आज तक उन पे जलाई न किसी ने किंदील[14]

ये चमनजार[15] ये जमना का किनारा, ये महल
ये मुनक्कश[16] दरो-दीवार, ये महेराब, ये ताक
इक शहनशाह ने दौलत का सहारा लेकर
हम गरीबो की मोहब्बत का उडाया है मजाक
मेरी महबूब ! कही और मिला कर मुझसे

---

१ इमारतें और मकबरे २ किले ३ स्वेच्छाचारी ४ महानता ५ स्तम्भ ६ ससार के दामन पर ७ बेल बूटे ८ पूर्वजो ९ लहू १० कारीगरी ने ११ प्रदान की है १२ सुन्दर रूप १३ जिनका कोई नाम निशान तक नही १४ फानूस १५ उद्यान १६ चित्रित

कभी-कभी

कभी कभी मेरे दिल मे खयाल आता है।

कि जिन्दगी तिरी जुल्फो की नम छाओ मे
गुजरने पाती तो शादाब हो भी सकती थी
ये तीरगी[1] जो मिरी जीस्त का मुकद्दर[2] है
तिरी नजर की शुआओ मे[3] खो भी सकती थी

अजब न था कि मैं बेगाना-ए-अलम[4] रहकर
तिरे जमाल की[5] रा'नाइयो मे[6] खो रहता
तिरा गुदाज[7] बदन, तेरी नीम बाज[8] आखें
इन्ही हसीन फसानो मे मह्व[9] हो रहता

पुकारती मुझे जब तल्खिया जमाने की
तिरो लबो से[10] हलावत[11] के घट पी लेता
हयात[12] चीखती फिरती बरहना-सर[13] और मैं
घनेरी जुल्फो के साए मे छुपके जी लेता

मगर ये हो न सका और अब ये आलम[14] है
कि तू नही, तिरा गम, तिरी जुस्तजू भी नही

---

१ अधरा २ जीवन का भाग्य ३ रश्मिया मे ४ दुखा से अपरिचित ५ सौन्दय की ६ लावण्यताआ मे ७ मासल ८ अधखुली ९ निमग्न १० होठो से ११ माधुय, रस १२ जीवन १३ नगे सिर १४ स्थिति

गुजर रही है कुछ इस तरह जिन्दगी जैसे
इसे किसी के सहारे की आर्जू भी नही

ज़माने भर के दुखो को लगा चुका हू गले
गुजर रहा हू कुछ अनजानी रहगुजारो से
मुहीब[1] साए मिरी सम्त बढते आते ह
हयातो - मौत[2] के पुर - हौल खारजारो से[3]

न कोई जादा[4], न मंजिल, न रोशनी का सुराग
भटक रही है खलाओ मे[5] जिन्दगी मेरी
इन्ही खलाओ मे रह जाऊगा कभी खोकर
मैं जानता हू मिरी हम-नफस[6], मगर यूही

कभी-कभी मेरे दिल मे खयाल आता है!

---

१ भयानक २ जीवन तथा मृत्यु ३ भयावह कटीले जगलो से ४ माग ५ शून्य मे ६ सहचर

फरार

अपने माज़ी के[1] तसव्वुर से[2] हिरासा[3] हू मैं
अपने गुज़रे हुए ऐयाम से[4] फरत है मुझे
अपनी बेकार तमन्नाओ पे शर्मिन्दा हू
अपनी बेसूद[5] उम्मीदो पे नदामत है मुझे

मेरे माज़ी को अधेरे में दबा रहने दो
मेरा माज़ी मेरी जिल्लत के सिवा कुछ भी नही
मेरी उम्मीदो का हासिल, मिरी काविश का[6] सिला
एक बेनाम अज़ीयत के[7] सिवा कुछ भी नही

कितनी बेकार उम्मीदो का सहारा लेकर
मैंने ऐवान[8] सजाए थे किसी की खातिर
कितनी बेरब्त[9] तमन्नाओ के मुबहम खाके[10]
अपने ख्वाबो मे बसाए थे किसी की खातिर

मुझसे अब मेरी मोहब्बत के फसाने[11] न कहो
मुझको कहने दो कि मैंने उन्हे चाहा ही नही
और वो मस्त निगाहे जो मुझे भूल गई
मैंने उन मस्त निगाहो को सराहा ही नही

---

१ भूतकाल के २ कल्पना से ३ भयभीत ४ दिनो से
५ व्यर्थ ६ प्रयत्न का ७ कष्ट के ८ महल ९ असगत
१० अस्पष्ट चित्र ११ कहानिया

मुझको कहने दो कि मैं आज भी जी सकता हू
इश्क नाकाम सही—जिन्दगी नाकाम नही
उन्हे अपनाने की ख्वाहिश, उन्हे पाने की तलब
शौके बेकार[1] सही, सअइ ए-गम अजाम[2] नही

वही गेसू[3], वही नजरें, वही आरिज[4], वही जिस्म
मैं जो चाहू तो मुझे और भी मिल सकते हैं
वो कवल जिनको कभी उनके लिए खिलता था
उनकी नजरो से बहुत दूर भी खिल सकते हैं

१ बेकार शौक २ दुखांत चेष्टा ३ केश ४ कपोल

कल और आज

(१)

कल भी बूदे बरसी थी
कल भी बादल छाए थे
और कवि ने सोचा था !

बादल ये आकाश के सपने उन जुल्फो के साए हैं
दोशे-हवा पर[1] मैखाने ही मैखाने घिर आए है
रुत बदलेगी फूल खिलेगे झोके मध बरसाएगे
उजले-उजले खेतो मे रगी आचल लहराएगे
चरवाहे बसो की धुन से गीत फजा मे बोएगे
आमो के झुडो के नीचे परदेसी दिल खोएगे
पेंग बढाती गोरी के माथे से कौदे लपकेंगे
जोहड के ठहरे पानी मे तारे आखे झपकेंगे
उलझी-उलझी राहो मे वो आचल थामे आएगे
धरती, फूल, आकाश, सितारे सपना-सा बन जाएगे

कल भी बूदें बरसी थी
कल भी बादल छाए थे
और कवि ने सोचा था !

---

१ वायु के कधे पर

(२)

आज भी बूँदें बरसेंगी
आज भी बादल छाए हैं
और कवि इस सोच मे है !
बस्ती पर बादल छाए है, पर ये बस्ती किसकी है
धरती पर अमृत बरसेगा, लेकिन धरती किसकी है
हल जोतेगी खेतो मे अल्हड टोली दहकानो की[१]
धरती से फूटेगी मेहनत फाकाकश इसानो की
फसलें काट के मेहनतकश, गल्ले के ढेर लगाएगे
जागीरो के मालिक आकर सब 'पूजी' ले जाएगे
बूढे दहकाना के घर बनिये की कुर्की आएगी
और कर्ज़े के सूद मे कोई गोरी बेची जाएगी
आज भी जनता भूकी है और कल भी जनता तरसी थी
आज भी रिमझिम बरखा होगी, कल भी बारिश बरसी थी
आज भी बादल छाए है
आज भी बूँदें बरसेगी
और कवि इस सोच मे है !

---

१ किसाना की

हिरास[1]

तेरे होंटों पे तबस्सुम[2] की वो हल्की-सी लकीर
मेरे तख़ईल में[3] रह-रह के झलक उठती है
यूं अचानक तिरे आरिज़ का[4] ख़याल आता है
जैसे ज़ुल्मत में[5] कोई शम्अ भड़क उठती है

तेरे पैराहने-रंगीं की[6] जुनूख़ेज़[7] महक
ख़्वाब बन-बन के मिरे ज़ेह्न में[8] लहराती है
रात की सर्द ख़मोशी में हर इक झोंके से
तेरे अन्फ़ास[9], तिरे जिस्म की आंच आती है

मैं सुलगते हुए राज़ों को[10] अयां[11] तो कर दूं
लेकिन इन राज़ों की तश्हीर से[12] जी डरता है
रात के ख़्वाब उजाले में बयां तो कर दूं
इन हसीं ख़्वाबों की ता'बीर से[13] जी डरता है

तेरी सांसों की थकन, तेरी निगाहों का सुकूत[14]
दर-हक़ीक़त[15] कोई रंगीन शरारत ही न हो
मैं जिसे प्यार का अंदाज़ समझ बैठा हूं
वो तबस्सुम, वो तकल्लुम[16] तिरी आदत ही न हो

---

१ भय २ मुस्कराहट ३ कल्पना में ४ कपोलों का ५ अंधेरे में ६ रंगीन लिबास की ७ उन्माद-भरी ८ मस्तिष्क में ९ श्वासों १० भेदों को ११ प्रकट १२ विज्ञापन से १३ स्वप्न फल से १४ मौन १५ वास्तव में १६ बातचीत (का ढंग)

सोचता हू कि तुझे मिलके मैं जिस सोच मे हू
पहले उस सोच का मकसूम[1] समझ लू तो कहू
मैं तिरे शह्‌र मे अनजान हू, परदेसी हू
तिरे अल्ताफ का[2] मफहूम[3] समझ लू तो कहू

कही ऐसा न हो, पाओ मिरे थर्रा जाए
और तिरी मरमरी[4] बाहो का सहारा न मिले
अश्क बहते रहे खामोश सियह[5] रातो मे
और तिरे रेशमी आचल का किनारा न मिले

---

१ भाग्य (परिणाम) २ कृपाओ का ३ अर्थ ४ संगमरमर की बनी (धवल, गोरी) ५ सियाह (काली)

इसी दोराहे पर।

अब न इन ऊँचे मकानों में कदम रक्खूंगा
मैंने इक बार ये पहले भी कसम खाई थी
अपनी नादार मोहब्बत की शिकस्तों के तुफ़ैल
जिन्दगी पहले भी शर्माई थी, झुंझलाई थी

और ये अहद[1] किया था कि ब-ईं-हाले-तबाह[2]
अब कभी प्यार भरे गीत नहीं गाऊंगा
किसी चिलमन ने पुकारा भी तो बढ़ जाऊंगा
कोई दरवाज़ा खुला भी तो पलट आऊंगा

फिर तिरे कांपते होंटों की फ़ुसूंकार[3] हंसी
जाल बुनने लगी, बुनती रही, बुनती ही रही
मैं खिंचा तुझसे, मगर तू मिरी राहों के लिए
फूल चुनती रही, चुनती रही, चुनती ही रही

बर्फ़ बरसाई मिरे ज़ेह्नो-तसव्वुर ने[4] मगर
दिल में इक शोला-ए-बेनाम-सा[5] लहरा ही गया
तेरी चुपचाप निगाहों को सुलगते पाकर
मेरी बेज़ार तबीयत को भी प्यार आ ही गया

---

१ प्रतिज्ञा २ यों तबाह-हाल होने पर भी ३ जादू भरी
४ मस्तिष्क तथा कल्पना ने ५ अनाम-सा शो'ला

अपनी बदली हुई नजरो के तकाज़े न छुपा
मैं इस अदाज का मफहूम[1] समझ सकता हू
तेरे ज़रकार[2] दरीचो को बुलदी की कसम
अपने इक़्दाम का मफ्हूम[3] समझ सकता हू

'अब न इन ऊचे मकानो मे कदम रक्खूगा'
मैंने इक बार ये पहले भी कसम खाई थी
इसी सर्माया-ओ-इफ़्लास के[4] दोराहे पर
जिन्दगी पहले भी शर्माई थी, झुझलाई थी

---

१ अर्थ २ स्वर्णिम ३ कदम बढाने का भाग्य (परिणाम)
४ धन तथा निर्धनता के

एक तस्वीरे-रंग

मैंने जिस वक्त तुझे पहले-पहल देखा था
तू जवानी का कोई ख्वाब नजर आई थी
हुस्न का नग्मए-जावेद[1] हुई थी मालूम
इश्क का जज्बए बेताब[2] नजर आई थी

ऐ तरबज़ारे-जवानी[3] की परीशां तितली
तू भी इक बू-ए-गिरफ्तार[4] है, मालूम न था
तेरे जल्वों में बहारें नज़र आती थी मुझे
तू सितम-खुर्दहे-अद्बार[5] है, मालूम न था

तेरे नाजुक-से परों पर ये ज़रो-सीम का[6] बोझ
तेरी परवाज़[7] को आज़ाद न होने देगा
तूने राहत की तमन्ना में जो गम पाला है
वो तिरी रूह को आबाद न होने देगा

तूने सर्माए की[8] छांओं में पनपने के लिए
अपने दिल, अपनी मोहब्बत का लहू बेचा है
दिन की तज़ईने-फसुर्दा[9] का असासा[10] लेकर
शोख[11] रातों की मसर्रत[12] का लहू बेचा है

१ अनंत संगीत २ विकल भावना ३ यौवन रूपी उद्यान
४ बंदी सुगंध ५ दुर्भाग्य द्वारा पीडित ६ सोने चांदी का
७ उडान ८ धन की ९ रूखी फीकी सज्जा १० निधि
११ चंचल १२ आनंद

जख्म-खुर्दा[1] है तखैयुल की[2] उडानें तेरी
तेरे गीतो मे तिरी रूह के गम पलते है
सुमगी आखो मे यू हसरतें लौ देती है
जैसे वीरान मजारो मे दिये जलते है

इसमे क्या फायदा रगीन लबादो के[3] तले
रूह जलती रहे, गलती रहे, पजमुर्दा[4] रहे
होट हसते हो दिखावे के तबस्सुम[5] के लिए
दिल गमे-जीस्त से[6] बोझल रहे आजुर्दा[7] रहे

दिल की तस्की[8] भी है आसाइशे-हस्ती की[9] दलील
जिन्दगी सिर्फ जरो-सीम का पैमाना नही
जीस्त एहसास[10] भी है, शौक भी है, दर्द भी है
सिर्फ अनफास की[11] तरतीब का अफसाना[12] नही

उम्र-भर रेंगते रहने से कही बेहतर है
एक लम्हा जो तिरी रूह मे वसअत[13] भर दे
एक लम्हा जो तिरे गीत को शोखी दे दे
एक लम्हा जो तिरी लय मे मसरत भर दे

---

१ घायल २ कल्पना की ३ वस्त्रो के ४ मुर्झाई हुई ५ मुस्कान ६ जीवन के गम से ७ चितित ८ सतोष ९ जीवन के सुख की १० अनुभूति ११ श्वासो की १२ कहानी १३ विशालता

मा'ज़ूरी

खल्वतो जल्वत मे[1] तुम मुझसे मिली हो बारहा
तुमने क्या देखा नही, मैं मुस्करा सकता नही
मैं, कि मायूसी मिरी फितरत मे[3] दाखिल हो चुकी
जब्र भी खुद पर करू तो गुनगुना सकता नही

मुझ मे क्या देखा कि तुम उल्फत का दम भरने लगी
मैं तो खुद अपने भी कोई काम आ सकता नही
रुह-अफ़ज़ा[4] है जुनूने-इश्क के[5] नग्मे मगर
अब मैं इन गाए हुए गीतो को गा सकता नही

मैंने देखा है शिकस्ते-साजे-उल्फत का समा[6]
अब किसी तहरीक पर[7] बरबत[8] उठा सकता नही
दिल तुम्हारी शिद्दते-एहसास से वाकिफ तो है
अपने एहसासात से दामन छुडा सकता नही

तुम मिरी होकर भी बेगाना ही पाओगी मुझे
मैं तुम्हारा होके भी तुम मे समा सकता नही
गाए है मैंने खुलूसे दिल से[9] भी उल्फत के गीत
अब रियाकारी से भी चाहू तो गा सकता नही

किस तरह तुम को बना लू मैं शरीके जिन्दगी[10]
मैं तो अपनी जिन्दगी का बार[11] उठा सकता नही
यास की[12] तारीकियो मे डूब जाने दो मुझे
अब मैं शम्अ-ए-आर्ज़ू की[13] लौ बढा सकता नही

---

१ विवशता २ एकात मे और सबके सामने ३ स्वभाव मे ४ प्राणवधक ५ प्रेमोन्माद के ६ प्रेम रूपी साज़ के टूटने का दृश्य ७ प्रेरणा पर ८ बाजा ९ शुद्ध हृदयता से १० जीवनसाथी ११ बोझ १२ निराशा की १३ कामना रूपी दीपक की

खुदकुशी से पहले

उफ ये वेदर्द सियाही ये हवा के नौहे[१]
किसको मालूम है इस शव की[२] सहर[३] हो कि न हो
इक नजर तेरे दरीचे की तरफ देख तो लू
डूवती आखो मे फिर तावे-नज़र[४] हो कि न हो

अभी रोशन है तिरे गर्म शविस्ता के[५] दिये
नीलगू पर्दो से छनती हैं शुआए अब तक
अजनवी वाहो के हल्के मे लचकती होगी
तेरे महके हुए वालो की रिदाए[६] अब तक

सर्द होती हुई वत्तो के धुए के हमराह
हाथ फैलाए वढे आते हैं वोझल साए
कौन पोछे मिरी आखो के सुलगते आसू
कौन उलझे हुए वालो की गिरह सुलझाए

आह ये गारे-हलाकत[७], ये दिये का महवस[८]
उम्र अपनी इन्ही तारीक[९] मकानो मे कटी
जिन्दगी फितरते-वेहिम की[१०] पुरानी तकसीर[११]
इक हकीकत[१२] थी मगर चद फमानो मे कटी

---

१ विलाप २ रात की ३ सुवह ४ देखने की शक्ति
५ शयनागार के ६ लटें ७ विनाश की कन्दरा ८ कारागार
९ अंधेरे १० निष्ठुर प्रकृति की ११ अपराध १२ वास्तविकता

कितनी आसाइशें[1] हँसती रही ऐवानों में
कितने दर मेरी जवानी पे सदा बंद रहे
कितने हाथों ने बुना अतलसो कमख्वाब मगर
मेरे मलबूस की[2] तक़्दीर में पैवंद रहे

जुल्म सहते हुए इन्सानों के इस मक़तल[3] में
कोई फर्दा के[4] तसव्वुर से कहाँ तक बहले
उम्र भर रेंगते रहने की सजा है जीना
एक-दो दिन की अजीयत हो तो कोई सह ले

वही जुल्मत[5] है फ़ज़ाओं पे[6] अभी तक तारी
जाने कब ख़त्म हो इन्सां के लहू की तक़तीर[7]
जाने कब निखरे सियहपोश फ़ज़ा का[8] जोबन
जाने कब जागे सितम खुर्दा बशर की[9] तक़्दीर

अभी रौशन हैं तिरे गर्म शबिस्ताँ के दिये
आज मैं मौत के गारों में उतर जाऊँगा
और दम तोड़ती बत्ती के धुएँ के हमराह
सरहदे-मर्गे-मुसलसल से[10] गुज़र जाऊँगा

---

१ सुख समृद्धियाँ २ लिबास की ३ वध स्थल ४ भावी कल के ५ अंधेरा ६ वातावरण पर ७ बूँद बूँद टपकना ८ काले वातावरण का ९ अत्याचार पीड़ित मनुष्य की १० निरंतर मृत्यु की सीमा से

मेरे गीत तुम्हारे हैं

अब तक मेरे गीतों में उम्मीद भी थी पसपाई भी
मौत के कदमों की आहट भी, जीवन की अंगड़ाई भी
मुस्तक्बिल की किरणें भी थीं, हाल की बोझल जुल्मत भी
तूफानों का शोर भी था और ख्वाबों की शहनाई भी

आज से मैं अपने गीतों में आतश-पारे भर दूंगा
मद्धम लचकीली तानों में जीवन-धारे भर दूंगा
जीवन के अंधियारे पथ पर मशअल लेकर निकलूंगा
धरती के फैले आंचल में सुर्ख सितारे भर दूंगा

आज से ऐ मजदूर-किसानो! मेरे राग तुम्हारे हैं
फाकाकश इन्सानो! मेरे जोग विहाग तुम्हारे हैं
जब तक तुम भूके-नंगे हो, ये शोले खामोश न होंगे
जब तक बे-आराम हो तुम, ये नग्मे राहत-कोश न होंगे

मुझको इसका रंज नहीं है लोग मुझे फ़नकार न मानें
फिक्रो-सुखन के ताजिर मेरे शे'रों को अशआर न मानें
मेरा फन, मेरी उम्मीदें, आज से तुमको अर्पन हैं
आज से मेरे गीत तुम्हारे दुख और सुख का दर्पन हैं

तुम से कुव्वत[1] लेकर अब मैं तुमको राह दिखाऊंगा
तुम परचम लहराना साथी, मैं बरबत पर गाऊंगा
आज से मेरे फन का मक्सद जंजीरें पिघलाना है
आज से मैं शबनम के बदले अंगारे बरसाऊंगा

---

१ शक्ति

नूरजहाँ के मजार पर

पहलुए-शाह मे[1] ये दुख़्तरे-जमहूर की[2] कब्र
कितने गुमगश्ता फसानो का[3] पता देती है
कितने ख़ूरेज हकायक से[4] उठाती है नकाब
कितनी कुचली हुई जानो का पता देती है

कैसे मगरूर शहनशाहो की तस्की के लिए
सालहासाल हसीनाओ के बाजार लगे
कैसे बहकी हुई नज़रो के तअय्युश[5] के लिए
सुर्ख महलो मे जवा जिस्मो के अम्बार लगे

कैसे हर शाख से मुँह-बद महकती कलिया
नोच ली जाती थी तज़ईने-हरम[6] की खातिर
और मुर्झा के भी आजाद न हो सकती थी
जिल्ले-सुबहान की[7] उल्फत के भरम की खातिर

कैसे इक फर्द के[8] होटो की जरा सी जुम्बिश
सद कर सकती थी बेलौस[9] वफाओ के चिराग
लूट सकती थी दमकते हुए हाथो का सुहाग
तोड सकती थी मए-इश्क से[10] लबरेज़ अयाग[11]

---

१ बादशाह की बगल मे २ जनता की बेटी की ३ भूली-बिसरी कहानियो का ४ रक्तयुक्त घटनाओ से ५ विलासप्रियता ६ हरम की शोभा ७ बादशाह की ८ व्यक्ति के ९ निष्काम १० प्रेम रूपी मदिरा से ११ भरे हुए प्याले

सहमी-सहमी-सी फ़ज़ाओं में ये वीरां मरकज़[1]
इतना ख़ामोश है, फ़र्याद-कुनां हो[2] जैसे
सर्द शाख़ों में हवा चीख़ रही है ऐसे
रूहे तक़दीसो वफ़ा[3] मर्सियाख़्वां हो[4] जैसे

तू मिरी जान! मुझे हैरतो-हसरत से न देख
हम में कोई भी जहांनूरो जहांगीर नहीं
तू मुझे छोड़ के ठुकरा के भी जा सकती है
तेरे हाथों में मिरे हाथ हैं, ज़ंजीर नहीं

१ केन्द्र २ न्याय की दुहाई दे रहा हो ३ प्रेम और पवित्रता की आत्मा ४ विलाप कर रही हो

जागीर

फिर उसी वादी-ए-शादाब में लौट आया हूँ
जिसमें पिन्हाँ मेरे ख़्वाबों की तरबगाह[1] है
मेरे अहबाब के सामाने-तअय्युश[2] के लिए
शोख़ सीने हैं, जवाँ जिस्म, हसीं बाँहें हैं

सब्ज़ खेतों में ये दुबकी हुई दोशीज़ाएँ
इनकी शिरयानों में[3] किस-किस का लहू जारी है
किसमें जुरअत है कि इस राज़ की तशहीर[4] करे
सबके लब पर मिरी हैबत का फ़ुसूँ[5] तारी है

हाए वो गर्म दिलावेज़[6] उबलते सीने
जिनमें हम सतवते-आबा का[7] सिला[8] लेते हैं
जाने इन मरमरी जिस्मों को ये मरियल दहक़ाँ[9]
कैसे इन तीरा[10] घरौंदों में जनम देते हैं

ये लहकते हुए पौदे, ये दमकते हुए खेत
पहले अजदाद की[11] जागीर थी अब मेरे हैं
ये चिरागाह, ये रेवड़, ये मवेशी, ये किसान
सब के सब मेरे हैं, सब मेरे हैं, सब मेरे हैं

---

१ आनन्द के स्थान २ मित्रों के भोग विलास की सामग्री ३ धमनियों में ४ विज्ञापन ५ आतंक का जादू ६ गर्म और मनोरम ७ बुजुर्गों के प्रताप का ८ बदला ९ किसान १० अंधेरे ११ पूर्वजों की

इनकी मेहनत भी मिरी, हासिले-मेहनत[1] भी मिरा
इनके बाज़ू भी मिरे, कुव्वते बाज़ू भी मिरी
मैं खुदावद[2] हू इस वुसअते-बेपाया[3] का
मौजे-आरिज़[4] भी मिरी, नक्हते-गेसू[5] भी मिरी

मैं उन अजदाद का बेटा हू जिन्होने पहम[6]
अजनबी कौम के साए की हिमायत की है
गद्र की साअते-नापाक से[7] लेकर अब तक
हर बडे वक्त मे सरकार की खिदमत की है

खाक पर रेंगने वाले ये फसुर्दा[8] ढाचे
इनकी नज़रें कभी तलवार बनी है न बन
इनकी गैरत पे हर-इक हाथ झपट सकता है
इनके अबरू की[9] कमानें न तनी है न तनें

हाए ये शाम, ये झरने, ये शफक की[10] लाली
मैं इन आसूदा फज़ाओ मे[11] जरा झूम न लू
वो दबे पाव उधर कौन चली जाती है
बढ के उस शोख के तरशे हुए लब[12] चूम न लू

---

१ परिश्रम का फल २ स्वामी ३ असीम विशालता ४ कपोलो (मे पैदा होने वाली) लहरें ५ केशो की सुगध ६ निरतर ७ अशुभ घडी से ८ शिथिल ९ भृकुटि की १० उदयास्त की ११ आनद वर्धक वातावरण मे १२ होठ

मादाम

आप बेवजह परीशान-सी क्यों है
लोग कहते है तो फिर ठीक ही कह
मेरे एहबाब ने[1] तहजीब न सीखी
मेरे माहौल मे[3] इन्सान न रहते

नूर-सरमाया से[4] है रूए-तमद्दुन की[5]
हम जहां है वहां तहजीब नहीं पल
मुफ्लिसी हिस्से-लताफत को[7] मिटा दे
भूक आदाब के[8] सांचे मे नही ढल

लोग कहते है तो लोगो पे तअज्जुब
सच तो कहते है कि नादारो की[9] इज्जत
लोग कहते है—मगर आप अभी तक
आप भी कहिए गरीबो मे शराफत

नेक मादाम! बहुत जल्द वो दौर
जब हम जीस्त के अदवार[10] परखने
अपनी जिल्लत की कसम, आपकी अजमत[11] की
हमको ता'जीम के[12] मेयार[13] परखने

---

१ मादाम का उर्दू रूपान्तर २ मित्रों ने ३ व
४ धन के प्रकाश से ५ सभ्यता के चेहरे की
७ कोमलता के भाव को ८ शिष्टता के ९
१० जीवन की गति ११ महानता १२ आदर
१३ मापदण्ड

हमने हर दौर में[1] तजलील[2] सही है लेकिन
हमने हर दौर के चेहरे को जिया[3] बख्शी है
हमने हर दौर में मेहनत के सितम झेले है
हमने हर दौर के हाथों को हिना[4] बख्शी है

लेकिन इन तल्ख मुबाहिस[5] से भला क्या हासिल
लोग कहते है तो फिर ठीक ही कहते होंगे
मेरे अहबाब ने तहजीब न सीखी होगी
मैं जहा रहता हू, वहा इन्सान न रहते होंगे

---

१ काल म २ अपमान ३ चमक-दमक ४ मेहदी ५ कटु विवादो से

तेरी आवाज

रात सुनसान थी, बोझल थीं फज़ा की सा
रूह पे छाए थे बेनाम गमों के सा
दिल को ये ज़िद थी कि तू आए तसल्ली दें
मेरी कोशिश थी कि कमबख्त को नींद आ जा

देर तक आंखों में चुभती रही तारों की चम
देर तक ज़ेहन सुलगता रहा तन्हाई
अपने ठुकराए हुए दोस्त की पुरसिश[1] के लि
तू न आई मगर इस रात की पहनाई[2]

यूं अचानक तिरी आवाज़ कहीं से आ
जैसे परवत का जिगर चीर के झरना फू
या ज़मीनों की मोहब्बत से, तड़प कर नागाह
आस्मानों से कोई शोख सितारा टू

शहद-सा घुल गया तल्खाबा-ए-तन्हाई[3] मे
रंग-सा फैल गया दिल के सियह-खाने मे
देर तक यूं तिरी मस्ताना सदाएं गूंजी
जिस तरह फूल चटकने लगें वीराने मे

तू बहुत दूर किसी अंजुमने नाज़ मे थी
फिर भी महसूस किया मैंने कि तू आई है
और नग्मों में छुपाकर मिरे खोए हुए ख्वाब
मेरी रूठी हुई नींदों को मना लाई है

---

१ हाल चाल पूछना २ विशालता ३ एकांत के कड़वेप

रात की सतह पे उभरे तिरे चेहरे के नुक्श
वही चुपचाप-सी आखे, वही सादा-सी नजर
वही ढलका हुआ आचल, वही रफ्तार का खम[2]
वही रह-रह के लचकता हुआ नाजुक पैकर[3]

तू मिरे पास न थी फिर भी सहर[4] होने तक
तेरा हर सास मिरे जिस्म को छूकर गुजरा
कतरा-कतरा तिरे दीदार[5] की शबनम टपकी
लम्हा-लम्हा तिरी खुश्बू से मुअत्तर[6] गुजरा

अब यही है तुझे मजूर तो ऐ जाने बहार[7]
मै तिरी राह न देखूगा सियह रातो मे
ढूढ लेगी मिरी तरसी हुई नजरे तुझको
नग्मा-ओ-शे'र की उमडी हुई बरसातो मे

अब तिरा प्यार सताएगा तो मेरी हस्ती
तेरी मस्ती भरी आवाज मे ढल जाएगी
और ये रूह जो तेरे लिए बेचैन-सी है
गीत बनकर तिरे होटो पे मचल जाएगी

तेरे नग्मात, तिरे हुस्न की ठडक लेकर
मेरे तपते हुए माहौल मे आ जाएगे
चन्द घडियो के लिए हो कि हमेशा के लिए
मेरी जागी हुई रातो को सुला जाएगे

---

१ नैन नक्श २ चाल की लचक ३ बदन ४ सुबह ५ दर्शन ६ सुगधित ७ बहारो की आत्मा

परछाइयां

जवान रात के सीने प दूधिया आंचल
मचल रहा है किसी ख्वाबे-मरमरी की[1] तरह
हसीन फूल हसीं पत्तियां, हसी शाखें
लचक रही है किसी जिस्मे-नाजनी की तरह
फजा मे घुल से गए है उफक के[3] नम खुतूत[4]
जमीं हसीन है, ख्वाबों की सरजमी की तरह
तसव्वुरात की[5] परछाइयां उभरती हैं
कभी गुमान[6] की सूरत कभी यकीं की तरह
वो पेड जिनके तले हम पनाह लेते थे
खड़े है आज भी साकित[7] किसी अमीं[8] की तरह

इन्ही के साए मे फिर आज दो धड़कते दिल
खमोश होटो से कुछ कहने सुनने आए हैं
न जाने कितनी कशाकश मे[9], कितनी काविश से[10]
ये सोते जागते लम्हे चुरा के लाए है

---

१ मरमर ऐसे (सुन्दर) सपन की २ सुदरी के बदन की
३ क्षितिज के ४ रेखाए नम नक्श ५ कल्पनाओ की ६ भ्रम
७ चुपचाप ८ विश्वस्त साक्षी ९ १० यत्न प्रयत्न स

यही फजा थी, यही रुत, यही जमाना था
यही से हमने मोहब्बत की इब्तिदा[1] की थी
धडकते दिल से, लरजती हुई निगाहो से
हुजूरे-गैब मे[2] नन्ही-सी इल्तिजा की थी

कि आर्जू के कवल खिल के फूल हो जाए
दिलो-नजर की दुआए कबूल हो जाए

तसव्वुरात की परछाइया उभरती है।

तुम आ रही हो जमाने की आख से बचकर
नजर झुकाए हुए और बदन चुराए हुए
खुद अपने कदमो की आहट से झेपती, डरती
खुद अपने साए की जुम्बिश से खौफ खाए हुए

तसव्वुरात की परछाइया उभरती है।

रवा है छोटी सी कश्ती हवाओ के रुख पर
नदी के साज पे मल्लाह गीत गाता है
तुम्हारा जिस्म हर इक लहर के झकोले से
मिरी खुली हुई बाहो मे झूल जाता है

तसव्वुरात की परछाइया उभरती है।

---

१ शुरुआत २ भगवान की सेवा म

मैं फूल टाग रहा हू तुम्हारे जूडे मे
तुम्हारी आख मसरत से झुकती जाती है
न जाने आज मैं क्या बात कहने वाला हू
जबान खुश्क है आवाज रुकती जाती है

तसव्वुरात की परछाइया उभरती है!

मिरे गले मे तुम्हारी गुदाज[1] बाह ह
तुम्हारे होटो पे मेरे लबो के साए हे
मुझे यकी है कि हम अब कभी न विछडेगे
तुम्ह गुमान कि हम मिलके भी पराए ह

तसव्वुरात की परछाइया उभरती है!

मिरे पलग पे बिखरी हुई किताबो को
अदाए-अज्जो-करम से[2] उठा रही हो तुम
सुहाग-रात जो ढोलक पे गाए जाते है
दबे सुरो मे वही गीत गा रही हो तुम

तसव्वुरात की परछाइया उभरती है!

---

१ कोमल २ विनय और कृपा की अदा से

वो लम्हे कितने दिलकश थे, वो घडिया कितनी प्यारी थी
वो सेहरे कितने नाजुक थे वो लडिया कितनी प्यारी थी
वस्ती की हर इक शादाब गली[1] खावो का जजीरा[2] थी गोया
हर मौजे-नफस[3], हर मौजे सबा[4], नग्मो का जखीरा[5] थी गोया

नागाह[6] लहकते खेतो से टापो की सदाए आने लगी
बारूद की बोझल बू लेकर पच्छम से हवाए आने लगी
ता'मीर के[7] रौशन चेहरे पर तखरीब का[8] बादल फैल गया
हर गाव मे वहशत[9] नाच उठी, हर शहर मे जगल फैल गया
मगरिब के मुहज्जब मुल्को से कुछ खाकी-वर्दी पोश आए
इठलाते हुए मगरूर आए, लहराते हुए मदहोश आए
खामोश जमी के सीने मे खेमो की तनाबे गडने लगी
मक्खन-सी मुलायम राहो पर बूटो की खराशे पडने लगी
फौजो के भयानक बैड तले चर्खा की सदाए डूब गई
जीपो की सुलगती धूल तले फूलो की कबाए[10] डूब गई

इन्सान की कीमत गिरने लगी, अजनास के[11] भाओ चढने लगे
चौपाल की रौनक घटने लगी, भरती के दफातर[12] बढने लगे
वस्ती के सजीले शोख जवा, बन-बन के सिपाही जाने लगे
जिस राह से कम ही लौट सके, उस राह पे राही जाने लगे

---

१ प्रसन्न गली २ स्वप्नो का टापू ३ श्वास तरग ४ वायु-तरग ५ भण्डार ६ अकस्मात ७ निर्माण के ८ ध्वस का ९ भय १० आवरण ११ चीजो के १२ दफ्तर

इन जाने वाले दस्तो मे गैरत भी गई, वरनाई[1] भी
माओ के जवा वेटे भी गए, वहनो के चहेते भाई भी
वस्ती पे उदासी छाने लगी, मेलो की वहारे खत्म हुई
आमो की लटकती शाखो से झूलो की कतारे खत्म हुई
धूल उडने लगी वाजारो मे, भूक उगने लगी खलियानो मे
हर चीज दुकानो मे उठकर, रूपोश हुई तहखानो मे
वदहाल घरो की वदहाली, वढते वढते जजाल वनी
महगाई वढकर काल वनी, सारी वस्ती कगाल वनी
चरवाहिया रस्ता भूल गई, पनहारिया पनघट छोड गई
कितनी ही कवारी अवलाए, मा-वाप की चौखट छोड गई
इफ्लास जदा दहकानो के[2] हल-वैल विके, खलियान विके
जीने की तमन्ना के हाथो, जीने ही के सब सामान विके
कुछ भी न रहा जब विकने को जिस्मो की तिजारत होने लगी
खलवत मे[3] भी जो ममनूअ[4] थी वो जलवत मे[5] जसारत[6]
होने लगी

तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

तुम आ रही हो सरे-आम वाल विखराए
हजार-गोना[7] मलामत का वार[8] उठाए हुए

---

१ जवानी २ निर्धनता के मारे किसानो के ३ एकात मे ४ निषिद्ध ५ खुलेआम ६ धृष्टता ७ हजार गुना ८ तिरस्कार का बोझ

हवस-परस्त निगाहों की चीरा-दस्ती से[१]
बदन की झेंपती उरियानियाँ छुपाए हुए

तसव्वुरात की परछाइयाँ उभरती हैं

मैं शहर जाके हर इक दर में झाँक आया हूँ
किसी जगह मेरी मेहनत का मोल मिल न सका
सितमगरों के सियासी क़िमारख़ाने में
अलम-नसीब फ़िरासत का मोल मिल न सका

तसव्वुरात की परछाइयाँ उभरती हैं

तुम्हारे घर में क़यामत का शोर बर्पा है
महाज़े-जंग से हरकारा तार लाया है
कि जिसका ज़िक्र तुम्हें ज़िन्दगी से प्यारा था
वो भाई नर्गा-ए-दुश्मन में[८] काम आया है

तसव्वुरात की परछाइयाँ उभरती हैं

हर एक गाम पे बदनामियों का जमघट है
हर एक मोड़ पे रुसवाइयों के मेले हैं
न दोस्ती, न तकल्लुफ़, न दिलबरी, न ख़ुलूस
किसी का कोई नहीं आज सब अकेले हैं

तसव्वुरात की परछाइयाँ उभरती हैं

---

१ लोलुप २ उद्दण्डता से ३ नग्नता ४ दरवाज़ा का ५ जुआघरों में ६ शोक ग्रस्त विवेक ७ युद्ध क्षेत्र से ८ शत्रु के आक्रमण में ९ कदम पर १० शुद्ध हृदयता सच्ची

वो रहगुज़र जो मिरे दिल की तरह सूनी है
न जाने तुमको कहा ले के जाने वाली है
तुम्ह खरीद रह है जमीर के कातिल
उफ्क पे खूने-तमन्नाए-दिल को[1] लाली है

तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं!

सूरज के लहू मे लिथडी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे
चाहत के सुनहरे ख्वाबो का अजाम है अब तक याद मुझे

उस शाम मुझे मालूम हुआ, खेतो की तरह इस दुनिया मे
सहमी हुई दोशीजाओ की[2] मुस्कान भी बेची जाती है
उस शाम मुझे मालूम हुआ, इस कारगहे-जरदारी मे[3]
दो भोली-भाली रूहो की पहचान भी बेची जाती है

उस शाम मुझे मालूम हुआ, जब बाप की खेती छिन जाए
ममता के सुनहरे ख्वाबो की अनमोल निशानी बिकती है
उस शाम मुझे मालूम हुआ, जब भाई जग मे काम आए
सरमाए के कहबाखाने मे बहनो की जवानी बिकती है

सूरज के लहू मे लिथडी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे
चाहत के सुनहरे ख्वाबो का अजाम है अब तक याद मुझे

---

१ क्षितिज पर मनोकामना के रक्त की २ तरुण कुमारियो की ३ पूजीवाद के कार्यक्षेत्र म ४ पूजी के वेश्यालय में

तुम आज हजारो मील यहा से दूर कही तन्हाई मे
या वज्मे-तरब-आराई मे[1]
मेरे सपने बुनती होगी, बैठी आगोश पराई मे

और मैं सीने मे गम लेकर दिन-रात मशक्कत[2] करता हू
जीने की खातिर मरता हू
अपने फन को रुसवा करके अगियार का[3] दामन भरता हू

मजबूर हू मैं, मजबूर हो तुम, मजबूर ये दुनिया सारी है
तन का दुख मन पर भारी है
इस दौर मे[4] जीने की कीमत या दारो-रसन[5] या ख्वारी है

मैं दारो रसन तक जा न सका, तुम जहद की[6] हद तक आ न सकी
चाहा तो मगर अपना न सकी
हम तुम दो ऐसी रुहे है जो मजिले-तस्की[7] पा न सकी

जीने को जिए जाते है मगर, सासो मे चिताए जलती है
खामोश वफाए जलती है
सगीन हकायक-जारो[8] मे, ख्वाबो की रिदाए[9] जलती है

और आज इन पेडो के नीचे फिर दो साए लहराए है
फिर दो दिल मिलने आए है
फिर मौत की आधी उट्ठी है, फिर जग के बादल छाए है

---

१ आनन्दोत्पादक महफिल म २ परिश्रम ३ गैरो का
४ काल मे ५ सूली ६ सघर्ष की ७ शान्ति की मजिल ८ कठोर वास्तविकताओ की भूमि मे (ससार म) ९ परतें

मैं सोच रहा हूँ उनका भी अपनी ही तरह अंजाम न हो
इनका भी जुनूँ[1] बदनाम न हो
इनके भी मुकद्दर में लिखी इक खून में लिथड़ी शाम न हो

सूरज के लहू में लिथड़ी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे
चाहत के सुनहरे ख्वाबों का अंजाम है अब तक याद मुझे

हमारा प्यार हवादिस[2] की ताब ला न सका
मगर इन्हें तो मुरादों की रात मिल जाए
हमें तो कश्मकशे-मर्गे-बेअमाँ[3] ही मिली
इन्हें तो झूमती गाती हयात मिल जाए

बहुत दिनों से है ये मशगला[4] सियासत का
कि जब जवान हों बच्चे तो कत्ल हो जाए
बहुत दिनों से है खब्त[5] हुक्मरानों का
कि दूर-दूर के मुल्कों में कहत बो जाए

बहुत दिनों से जवानी के ख्वाब वीराँ हैं
बहुत दिनों से मोहब्बत पनाह ढूँढती है
बहुत दिनों से सितम-दीदा-शाहराहों में[6]
निगारे-जीस्त[7] की इस्मत पनाह ढूँढती है

---

१ प्रेमोन्माद २ दुर्घटनाओं की ३ बेपनाह मृत्यु का संघर्ष
४ मनोविनोद ५ उन्माद ६ अत्याचार पीड़ित राजपथों में
७ जीवन रूपी प्रेयसी

तुझको खबर नही मगर इक सादालोह का
बर्बाद कर दिया तिरे दो दिन के प्यार ने

साहिर—अमृता प्रीतम के साथ

साहिर—वाजिदा तबस्सुम—दिलीप कुमार

साहिर—लता मंगेशकर— किशोर कुमार

साहिर—महेन्द्रनाथ—जा निसार अख़्तर

सरदार जाफरी—साहिर—अख़्तरुल-ईमान
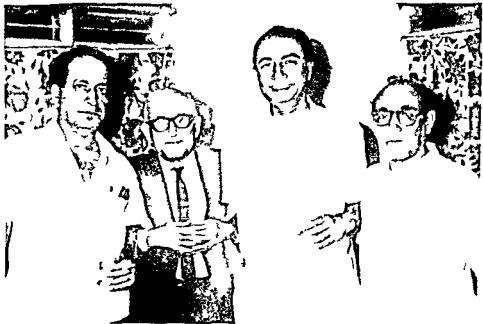
महेन्द्रनाथ—ख्वाजा अहमद अब्बास—साहिर—कृश्न चन्दर

राजेन्द्र सिंह बेदी—मुनीश सक्सना—सलमा सिद्दीकी
ख्वाजा अहमद अब्बास—बेगम मजरूह—मजरूह
साहिर—सरदार जाफरी—कृश्न चन्दर

साहिर अपने दोस्तो के साथ
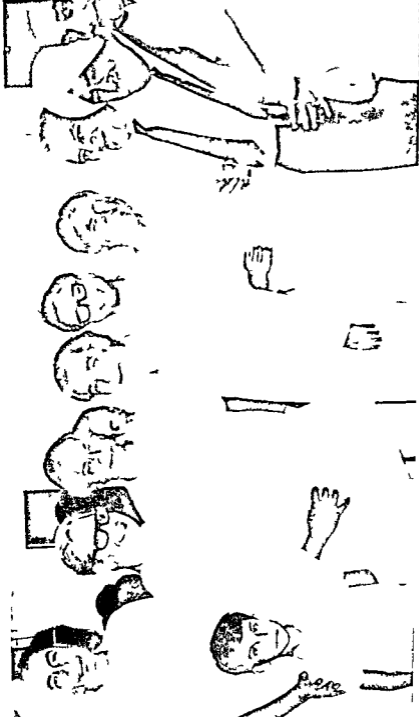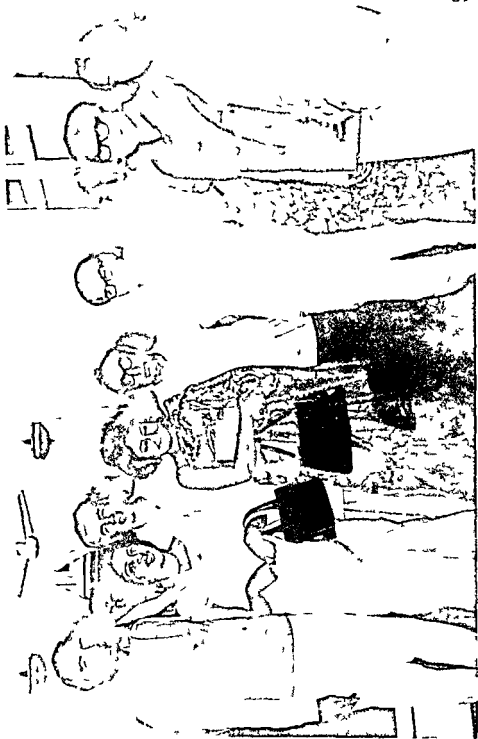
तीन गहरे मित्र
साहिर—प्रकाश पण्डित—जां निसार 'अख्तर'

चलो कि आज सभी पायमाल[1] रूहों से
कहें कि अपने हर इक ज़ख़्म को ज़बाँ कर लें
हमारा राज़, हमारा नहीं सभी का है
चलो कि सारे ज़माने को राज़दाँ कर लें

चलो कि चल के सियासी मुक़ामिरों[2] से कहें
कि हमको जंगो-जदल के चलन से नफ़रत है
जिसे लहू के सिवा कोई रंग न रास आए
हमें हयात के[3] उस पैरहन में[4] नफ़रत है

कहो कि अब कोई क़ातिल अगर इधर आया
तो हर क़दम पे ज़मीं तंग होती जाएगी
हर एक मौजे-हवा[5] रुख़ बदल के झपटेगी
हर एक शाख़ रगे-संग[6] होती जाएगी

उठो कि आज हर इक जंगजू से ये कह दें
कि हमको काम की ख़ातिर कलों की हाजत[7] है
हमें किसी की ज़मीं छीनने का शौक़ नहीं
हमें तो अपनी ज़मीं पर हलों की हाजत है

कहो कि अब कोई ताजिर इधर का रुख़ न करे
अब इस जगह कोई कँवारी न बेची जाएगी
ये खेत जाग पड़े, उठ खड़ी हुईं फ़सलें
अब इस जगह कोई क्यारी न बेची जाएगी

---

१ कुचली हुई २ जुएबाज़ों से ३ जीवन के ४ लिबास से ५ वायु तरंग ६ पत्थर की नाड़ी ७ आवश्यकता

ये सरजमीन है गौतम की और नानक की
इस अर्ज़े-पाक पे[1] वहशी न चल सकेंगे कभी
हमारा खून अमानत है नस्ले-नौ के[2] लिए
हमारे खून पे लश्कर न पल सकेंगे कभी

कहो—कि आज भी हम सब अगर खमोश रहे
तो इस दमकते हुए खाकदा की[3] खैर नही
जुनू की[4] ढाली हुई एटमी बलाओ मे
जमी की खैर नही, आस्मा की खैर नही

गुजश्ता[5] जग मे घर ही जले मगर इस बार
अजब नही कि ये तन्हाइया भी जल जाए
गुज़श्ता जग मे पैंकर[6] जले मगर इस बार
अजब नही कि ये परछाइया भी जल जाए

तसव्वुरात की परछाइया उभरती है!

१ पवित्र भूमि पर २ नई पीढी के ३ ससार की ४ उन्माद की ५ पिछली ६ शरीर

मेरे गीत

मिरे सरकश[1] तराने सुनके दुनिया ये समझती है
कि शायद मेरे दिल को इश्क के नग्मो से नफरत है
मुझे हगामा-ए-जगो जदल[2] मे कैफ[3] मिलता है
मिरी फितरत[4] को खूरेजी[5] के अफसानो से रग्बत[6] है

मिरी दुनिया मे कुछ वकअत[7] नही है रक्सो-नग्मे की[8]
मिरा महबूब नग्मा[9] शोरे आहगे-बगावत है
मगर ऐ काश ! देखें वो मिरी परसोज[10] रातो को
मैं जब तारो पे नजरें गाड कर आसू बहाता हू

तसव्वर[11] बनके भूली वारिदातें[12] याद आती है
तो सोजो-दर्द की शिद्दत[13] से पहरो तिलमिलाता हू
कोई ख्वाबो मे ख्वाबीदा[14] उमगो को जगाती है
तो अपनी जिन्दगी को मौत के पहलू मे पाता हू

मैं शायर हू मुझे फितरत[15] के नज्जारो से उल्फत है
मिरा दिल दुश्मने-नग्मा-सराई[16] हो नही सकता
मुझे इन्सानियत का दर्द भी बख्शा है कुदरत ने
मिरा मकसद फक्त शोला-नवाई[17] हो नही सकता

---

१ विद्राहपूण २ युद्ध और सघष ३ आनन्द ४ स्वभाव ५ रक्त पात ६ रुचि ७ मूल्य ८ नत्य और सगीत की ९ प्रिय सगीत १० दद भरी ११ कल्पना १२ दुघटनाए १३ तीव्रता १४ सोई हुई १५ प्रकृति १६ गीत गाने का विरोधी १७ अग्नि-भाष्य

जवा हू मैं जवानी लग्जिशो का[1] एक तूफा है
मिरी बातो मे रगे-पारसाई[2] हो नही सकता

मिरे सरकश तराना की हकीकत[3] है तो इतनी है
कि जब मैं देखता हू भूक के मारे किसानो को
गरीबो, मुफलिसो को, बेकसो को, बेसहारो को
सिसकती नाजनीनो को, तडपते नौजवानो को
हुकूमत के तशद्दुद[4] को, अमारत[5] के तकब्बुर[6] को
किसी के चीथडो को और शहनशाही खजानो को

तो दिल ताबे-नशाते-बज्मे-इश्रत ला नही सकता[7]
मैं चाहू भी तो ख्वाब-आवर[8] तराने गा नही सकता

---

१ लडखडाहटो का २ सयम का रग ३ वास्तविकता
४ अत्याचार ५ धन दौलत ६ घमड ७ वभवपूर्ण समाज के
ऐश्वय को महन नही कर सकता ८ सुलाने वाले

इन्तिजार

चाद मद्धम है आस्मा चुप है
नीद की गोद मे जहा चुप है

दूर वादी मे दूधिया बादल
झुक के परबत को प्यार करते है
दिल मे नाकाम हसरतें लेकर
हम तिरा इंतिजार करते है

इन बहारो के साए मे आ जा
फिर मोहब्बत जवा रहे न रहे
जिन्दगी तेरे नामुरादो पर
कल तलक मेह्रबा रहे न रहे

रोज की तरह आज भी तारे
सुब्ह की गर्द मे न खो जाए
आ, तिरे गम मे जागती आखें
कम से कम एक रात सो जाए

चाद मद्धम है आस्मा चुप है
नीद की गोद मे जहा चुप है

आवाजे आदम[1]

दबेगी कब तलक आवाजे-आदम, हम भी देखेंगे
रुकेंगे कब तलक जज्बाते-बरहम[2] हम भी देखेंगे
चलो यूँ ही सही ये जौरे-पैहम[3] हम भी देखेंगे
दरे-जिन्दा से[4] देखें या उरूजे-दार[5] से देखें
तुम्हे रुसवा सरे-बाजारे-आलम[7] हम भी देखेंगे
जरा दम लो मआले-शौक्ते-जम हम भी देखेंगे
ब-जो'मे-कुव्वते-फौलादो-आहन[8] देख लो तुम भी
ब-फैजे-जज्बए-ईमाने-मोहकम[9] हम भी देखेंगे
जबीने-कज-कुलाही[10] खाक पर खम[11] हम भी देखेंगे
मुकाफाते-अमल[12] तारीखे-इन्सा की[13] रिवायत[14] है
करोगे कब तलक नावक[15] फराहम[16] हम भी देखेंगे
कहा तक है तुम्हारे जुल्म में दम हम भी देखेंगे
ये हगामे विदा ए-शब[17] है ऐ जुल्मत के फरजदो[18]
सहर के दोश पर[19] गुलनार परचम[20] हम भी देखेंगे
तुम्हे भी देखना होगा ये आलम[21] हम भी देखेंगे

---

१ मानव की आवाज़ २ व्याकुल भावनाए ३ निरतर अत्याचार ४ कारागार के द्वार से ५ सूली के ऊपर ६ अपमानित ७ ससार रूपी बाजार म ८ लोहे और फौलाद (हथियारो) की शक्ति के बल पर ९ दृढ विश्वास की भावना की कृपा से १० बादशाहो का टेढी पाग वाला माथा ११ झुका हुआ १२ क्रिया का प्रतिकार १३ मानव जाति के इतिहास की १४ परिपाटी १५ तीर १६ एकत्रित, जुटाना १७ रात्रि की विदा का समय १८ अधकार के बेटो १९ सुबह के कधे पर २० सुर्ख रग का झडा २१ स्थिति

आज

साथियो ! मैंने बरसों तुम्हारे लिए
चांद, तारों, बहारों के सपने बुने
हुस्न और इश्क के गीत गाता रहा
आर्ज़ुओं के ऐवां[1] सजाता रहा
मैं तुम्हारा मुगन्नी[2], तुम्हारे लिए
जब भी आया नए गीत लाता रहा
आज लेकिन मिरे दामने-चाक में[3]
गर्दे-राहे सफ़र के सिवा कुछ नहीं
मेरे बरबत के सीने में नग्मों का दम घुट गया है
तानें चीखों के अंबार में दब गई हैं
और गीतों के सुर हिचकियां बन गए हैं
मैं तुम्हारा मुगन्नी हूं, नग्मा नहीं हूं
और नग्मे की तख्लीक[4] का साजो-सामां
साथियो ! आज तुमने भसम कर दिया है
और मैं—अपना टूटा हुआ साज थामे
सर्द लाशों के अंबार को तक रहा हूं
मेरे चारों तरफ मौत की वहशतें[5] नाचती हैं
और इन्सान की हैवानियत[6] जाग उठी है

---

१ कामनाओं के महल २ गायक ३ फटे दामन में
४ रचना ५ वीभत्सताएं ६ पशुता

बबरियत[1] के खूंख्वार अफरीत[2]
अपने नापाक जबड़ों को खोले
खून पी पी के गुर्रा रहे हैं
बच्चे माओं की गोदों में सहमे हुए हैं
इस्मतें[3] सर-बरहना[4] परीशान हैं
हर तरफ शोरे-आहो-बुका[5] है
और मैं इस तबाही के तूफान में
आग और खून के हैजान[6] में
सरनिगूं[7] और शिकस्ता[8] मकानों के मलबे में पुर रास्तों पर
अपने नग्मों की झोली पसारे
दर-ब-दर फिर रहा हूं—
मुझको अम्न और तहजीब की भीख दो
मेरे गीतों की लय, मेरे सुर, मेरी नै
मेरे मजरूह[9] होंटों को फिर सौंप दो
साथियो ! मैंने बरसों तुम्हारे लिए
इन्किलाब और बगावत के नग्मे अलापे
अजनबी[10] राज के जुल्म की छाओं में
सरफरोशी[11] के ख्वाबीदा[12] जज्बे[13] उभारे
इस सुबह की राह देखी
जिसमें इस मुल्क की रूह आजाद हो

---

१ बबरता २ राक्षस ३ स्तीत्व ४ नगे सिर ५ आहो और विलाप का शोर ६ प्रचडता ७ सिर झुकाए ८ टूटे फूटे ९ घायल १० विदेशी ११ बलिदान १२ सोए हुए १३ भावनाए

आज ज़ंजीरे-महकूमियत[1] कट चुकी है
और इस मुल्क के बहरो-बर[2], बामो-दर[3]
अजनबी क़ौम के ज़ुल्मत-अफ़शाँ[4] फरेरे[5] की मनहूस
छाओं से आज़ाद हैं

खेत सोना उगलने को बेचैन हैं
वादियाँ लहलहाने को बेताब हैं
कोहसारों[6] के सीने में हैजान है
संग और ख़िश्त[7] बेबाको-ख़ुद्दार[8] हैं
इनकी आँखों में ता'मीर[9] के ख़्वाब हैं
इनके ख़्वाबों को तकमील[10] का रूप दो
मुल्क की वादियाँ, घाटियाँ, खेतियाँ,
औरतें, बच्चियाँ—
हाथ फैलाए ख़ैरात की मुंतज़िर[11] हैं
इनको अम्न और तहज़ीब की भीख दो
माओं को उनके होंटों की शादाबियाँ[12]
नन्हे बच्चों को उनकी ख़ुशी बख़्श दो
मुल्क की रूह को ज़िंदगी बख़्श दो

---

१ दासता की कड़ी २ समुद्र और धरती ३ छत और द्वार ४ अंधकार फैलाने वाले ५ झंडे ६ पहाड़ों ७ पत्थर और ईंट ८ जागरूक ९ निर्माण १० पूर्णता ११ प्रतीक्षित १२ खुशियाँ १३ वातावरण

कांधो पर सगीन, कुदालें, हाथो पर बेबाक[1] लगन
दहकानो के दल निकले है अपनी बिगड़ी आप बनाने

आज पुरानी तदबीरो से[2] आग के शोले थम न सकेंगे
उभरे जज़्बे दब न सकेंगे उखडे परचम[3] जम न सकेंगे

राजमहल के दरबानो से ये सरकश तूफ़ा न रुकेगा
चन्द किराए के तिनको से सैले-बेपाया[4] न रुकेगा

कांप रहे है ज़ालिम सुल्ता, टूट गए दिल जब्बारो के[5]
भाग रहे है ज़िल्ले-इलाही[6] मुह उतरे है गद्दारो के

एक नया सूरज चमका है, एक अनोखी ज़ौबारी[7] है
खत्म हुई अफ़राद की शाही[8], अब जमहूर[9] की सालारी[10] है

---

१ निडर २ उपायो से ३ झडे ४ असीम बाढ ५ अत्याचारियो के ६ परमात्मा की छाया' (बादशाह) ७ प्रकाश की वर्षा ८ व्यक्तियो की सत्ता ९ जनता १० नेतत्व

नया सफर है, पुराने चिराग गुल कर दो

फरेबे - जन्नते - फर्दा के[1] जाल टूट गए
हयात[2] अपनी उमीदों पे शर्मसार[3] सी है
चमन में जश्ने वुरूदे बहार[4] हो भी चुका
मगर निगाहे - गुलो - लाला[5] सोगवार[6] सी है

फजा[7] में गर्म बगूलों का रक्स[8] जारी है
उफुक पे[9] खून की मीना[10] छलक रही है अभी
कहां का मेह्रे - मुनव्वर[11], कहां की तनवीरें[12]
कि बामो दर पे[13] सियाही झलक रही है अभी

फजाएं[14] सोच रही हैं कि इब्ने - आदम ने[15]
खिरद[16] गंवा के, जुनूं[17] आजमा के क्या पाया
वही शिकस्ते - तमन्ना[18], वही गमे - अय्याम[19]
निगारे-जीस्त[20] ने सब कुछ लुटा के क्या पाया

भटक के रह गईं नजरें खला[21] की वुसअत[22] में
हरीमे-शाहिदे - रा'ना[23] का कुछ पता न मिला
नवीन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सफर-नसीब रफीको[1] ! कदम बढाए चलो
पुराने राहनुमा[2] लौट कर न देखेंगे
तुलू-ए-सुब्ह[3], से तारों की मौत होनी है
शबों के[4] राज-दुलारे इधर न देखेंगे

---

१ सहचर मित्रो २ पथप्रदर्शक ३ प्रभातोदय ४ रातों के

लहू नज्र[1] दे रही है हयात[2]।

मिरे जहा मे समनजार[3] ढूडने वाले
यहा बहार नही आतशी बगूले[4] है
धनक के रग नही, सुरमई फजाओ मे
उफुक से ता-ब-उफुक[5] फासियो के झूले है
फिर एक मजिले-खू-बार[6] की तरफ है रवा[7]
वो रहनुमा[8] जो कई बार राह भूले है

बुलद दावा-ए-जमहूरियत[9] के पर्दे मे
फरोगे-महबसो-जिदा[10] है ताजियाने[11] है
ब-नामे-अम्न[12] है जगो-जदल के मनसूबे
ब-शोरे-अद्ल[13], तफावुत के[14] कारखाने है
दिलोपे खौफके पहरे, लबोपे[15] कुफ्ले-सुकूत[16]
सरो पे गम सलाखो के शामियाने है

मगर मिटे है कही जब्र और तशद्दुद से[17]
वो फलसफे कि जिला[18] दे गए दिमागो को
कोई सिपाहे-सितमपेशा[19] चूर न कर सकी
बशर[20] की जागी हुई रूह के अयागो[21] को

---

१ भेंट २ जिन्दगी ३ उपवन ४ अग्नि-बवडर ५ क्षितिज से क्षितिज तक ६ लहू बिखेरती मजिल ७ चल रहे है ८ पथ प्रदर्शक ९ जनतन्त्र के ऊचे दावे १० कारागारो का उत्थान ११ कोडे १२ शाति के नाम पर १३ न्याय के शोर के साथ १४ भेद भाव के १५ होठो पर १६ चुप्पी के ताले १७ हिंसा से १८ चमक १९ अत्याचारी सेना २० मानव की २१ पात्रो को

कदम-कदम पे लहू नज्र दे रही है हयात
सियाहियों मे उलझते हुए चिरागों को

रवा है काफिला - ए - इर्तिका- ए इन्सानी[1]
निजामे आतशो-आहन का[2] दिल हिलाए हुए
बगावतों के दुहल[3] बज रहे है चार तरफ
निकल रहे है जवा मशअले जलाए हुए
तमाम अर्जे-जहा[4] खौलता समुन्दर है
तमाम कोहो बियाबा[5] है तिलमिलाए हुए

मिरी सदा[6] को दबाना तो खैर मुमकिन है
मगर हयात की ललकार कौन रोकेगा?
फसीले-आतशो-आहन[7] बहुत बुलद सही
बदलते वक्त की रफ्तार कौन रोकेगा?
नए खयाल की परवाज[8] रोकने वालो
नए अवाम की तलवार कौन रोकेगा?

पनाह लेता है जिन मकबरो की[9] तीरा निजाम[10]
वही से सुबह के लश्कर निकलने वाले है
उभर रहे है फजाओ मे अहमरी[11] परचम[12]
किनारे मशरिको-मगरिब के मिलने वाले है
हजार बर्क[13] गिरे लाख आधिया उट्ठें
वो फूल खिल के रहेगे जो खिलने वाले हैं

---

१ मानव विकास का काफिला २ आग और लोहे के राज्य का ३ ढोल ४ धरती ५ पर्वत, जगल ६ आवाज ७ लोहे और आग की प्राचीर ८ उडान ९ कारागारो की १० काला प्रबध ११ सुर्ख १२ झडे १३ बिजली

मै नही तो क्या ?

मिरे लिए ये तकल्लुफ, ये दुख, ये हसरत क्यो
मिरी निगाहे-तलब[1] आखिरी निगाह न थी
हयातज़ारे-जहा की[2] तवील[3] राहो मे
हजार दीदा-ए-हैरा[4] फुसू[5] बिखरेगे
हजार चश्मे-तमन्ना[6] बनेगी दस्ते-सवाल[7]
निकल के खलवते-गम से[8] नजर उठाओ तो
वही शफक[9] है वही जौ है, मै नही तो क्या ?

मिरे बगैर भी तुम कामियाबे-इशरत[11] थी
मिरे बगैर भी आबाद थे नशात-कदे[12]
मिरे बगैर भी तुमने दिए जलाए है
मिरे बगैर भी देखा है जुल्मतो का[13] नुजूल[14]
मिरे न होने से उम्मीद का जिया[15] क्यो हो ?
बढो चलो मए-इश्रत के[16] जाम छलकाती
तुम्हारी सेज, तुम्हारे बदन के फूलो पर
उसी बहार का परतौ[17] है, मैं नही तो क्या ?

---

१ प्रेम दृष्टि २ जीवन स परिपूर्ण ससार की ३ लम्बी ४ आश्चय भरी आखें ५ जादू ६ इच्छुक नेत्र ७ सवाली का हाथ ८ उदास एकात से ९ उषा १० चमक ११ सुख-वैभव म सफल १२ रग महल १३ अधेरो का १४ उतरना (उमडना) १५ हानि १६ सुख-वैभव की मदिरा के १७ प्रतिबिम्ब

मिरे लिए ये उदासी, ये सोग क्यो आख़िर
मलीह[1] चेहरे पे गर्दे-फ़ुसुर्दगी[2] कैसी
वहारे-गाज़ा[3] से आरिज को[4] ताज़गी बख़्शो
अलील[5] आखो मे काजल लगाओ, रग भरो
सियाह जूडे मे कलियो की कहकशा[6] गूधो
हज़ार हापते सीने, हज़ार कापते लब
तुम्हारी चश्मे-तवज्जो के[7] मुन्तज़िर ह अभी
जिलो मे[8] नग्मा-ओ-रगो-वहारो-नूर लिए

हयात गर्मे-तगो-दौ[9] है, मैं नही तो क्या ?

---

१ सलोन २ उदासी की धूल ३ पाउडर की सजावट
४ कपोलो को ५ बीमार ६ आकाश गगा ७ कृपा दृष्टि के
८ सग मे ६ भाग दौड म व्यस्त

एक शाम

कुमकुमो की[1] जहर उगलती रोशनी
सगदिल, पुरहोल[2] दीवारो के साए
आहनी[3] बुत, देव पैकर[4] अजनबी
चीखती चिंघाडती सूनी सराए
रूह उलझी जा रही है, क्या करू ?

चार जानिब इरतिआशे-रग-ओ-नूर[5]
चार जानिब अजनबी बाहो के जाल
चार जानिब सूफिशा[6] परचम[7] बुलद
मैं, मिरी गैरत, मिरा दस्ते-सवाल[8]
ज़िन्दगी शर्मा रही है, क्या करू ?

कारगाहे-जीस्त के[9] हर मोड पर
रूहे-चगेजी[10] बरअफगदा - नकाब[11]
शाम ! ऐ सुब्हे-जहाने नौ[12] की जौ[13]
जाग ऐ मुस्तकबिले-इन्सा के[14] ख्वाब
आस डूबी जा रही है, क्या करू ?

---

१ बिजली के हडो की २ भयभीत करने वाली ३ लौह ४ देवो के से आकार वाले ५ चारो ओर रग और प्रकाश की कपकपाहट है ६ लहू बिखेरते हुए ७ झडे ८ मागने वाला हाथ ९ जिन्दगी के कर्मक्षेत्र के १० चगेज (जालिम बादशाह) की आत्मा ११ नकाब उलटे हुए १२ नए ससार की सुबह १३ प्रकाश १४ मनुष्य के भविष्य के

शहजादे

जेहन[1] मे अज़मते-अजदाद के[2] किस्से लेकर
अपने तारीक[3] घरौदो के खला मे[4] खो जाओ
मरमरी[5] ख्वाबो की परियो से लिपटकर सो जाओ
अब्रपारो पे[6] चलो, चाद सितारो मे उडो
यही अजदाद से[7] विरसे मे मिला है तुमको

दूर मगरिब की फजाओ मे दहकती हुई आग
अहले-सर्माया की[8] आवेज़िश-बाहम[9] न सही
जंग-सर्माया-ओ-मेहनत ही सही
दूर मगरिब मे है—मशरिक की फजा मे तो नही
तुमको मगरिब के बखेडो से भला क्या लेना

तीरगी[10] खत्म हुई, सुर्ख शुआए[11] फैली
दूर मगरिब की फजाओ मे तराने गूजे
फतहे-जमहूर के[12], इन्साफ के, आजादी के
साहिले-शर्क प[13] गैसो का धुआ छाने लगा
आग बरसाने लगे अजनबी तोपो के दहन[14]
ख्वाबगाहो की[15] छत गिरने लगी

---

१ मस्तिष्क २ पूर्वजो की महानता के ३ अधेरे ४ शून्य मे ५ मरमर जैसी ६ बादलो के टुकडो पर ७ पूर्वजो से ८ पूजीपतियो की ९ परस्पर खीचातानी १० अधकार ११ लाल किरणें १२ जनता की विजय के १३ पूरब के तट पर १४ मुह १५ शयनागारो की

अपने बिस्तर से उठो !
नए आकाओं की ता'जीम[1] करो
और—फिर अपने घरौंदों के सना[2] में खो जाओ
तुम बहुत देर—बहुत देर तलक सोए रहे

---

१ आदर स्वागत २ शून्य

सुबहे-नौरोज[1]

फूट पड़ी मशरिक से किरनें

हाल बना माज़ी[2] का फ़साना, गूंजा मुस्तकबिल[3] का तराना
भेजे हैं एहबाब ने[4] तोहफ़, अट पड़े हैं मेज़ के कोने
दुल्हन बनी हुई हैं राहें
जश्न मनाओ साल-ए-नौ के[5]

निकली है बंगले के दर से[6]

इक मुफ़लिस दहकान[7] की बेटी, अफ़सुर्दा, मुर्झाई हुई-सी
जिस्म के दुखते जोड़ दबाती, आंचल से सीने को छुपाती
मुट्ठी में इक नोट दबाए
जश्न मनाओ साल-ए-नौ के

भूके, ज़र्द, गदागर[8] बच्चे

कार के पीछे भाग रहे हैं, वक्त से पहले जाग उठे हैं
पीप भरी आंख सहलाते, सर के फोड़ों को खुजलाते
वो देखो कुछ और भी निकले
जश्न मनाओ साल-ए-नौ के

---

१ नव दिवस का प्रभात २ अतीत ३ भविष्य ४ मित्रों ने
५ नव वर्ष के ६ दरवाज़े से ७ किसान ८ भिखारी

नाकामी

मैंने हरचन्द गमे-इश्क को खोना चाहा
गमे-उल्फत, गमे-दुनिया मे समोना चाहा

वही अफसाने मिरी सम्त[1] रवा[2] है अब तक
वही शो'ले मिरे सीने मे निहा[3] है अब तक
वही बेसूद खलिश[4] हे मिरे सीने मे हनोज[5]
वही बेकार तमन्नाए जवा ह अब तक
वही गेसू[6] मिरी रातो पे है बिखरे-बिखरे
वही आखे मिरी जानिब निगरा है[7] अब तक

कसरते-गम[8] भी मिरे गम का मुदावा[9] न हुई
मेरे बेचैन खयालो को सुकू[10] मिल न सका
दिल ने दुनिया के हर इक दद को अपना तो लिया
मुजमहिल रूह को[11] अदाजे-जुनू[12] मिल न सका

मेरी तखईल का[13] शीराजा ए-बरहम[14] है वही
मेरे बुझते हुए एहसास का आलम[15] है वही
वही बेजान इरादे वही बेरग सवाल
वही बेरूह कशाकश[16] वही बेचैन खयाल

आह ! इस कश्मकशे-सुबहो मसा[17] का अजाम
मैं भी नाकाम, मिरी सअई ए-अमल[18] भी नाकाम

---

१ और २ अग्रसर ३ छुपे हुए ४ व्यथ की चुभन ५ अभी ६ वेरा ७ देख रही हैं ८ गम की अधिकता ९ इलाज १० शान्ति ११ व्याकुल आत्मा को १२ उ माद का ढग १३ कल्पना का १४ बिखरा क्रम १५ स्थिति १६ व्यथ की खीचातानी १७ सुबह और शाम के सघष १८ काम करने की कोशिश

गहराइयो मे सो गए
तारीकियो मे[1] खो गए
उन का तसव्वुर नागहा
लेता है दिल मे चुटकिया
और यू रुलाता है मुझे
बेकल बनाता है मुझे
वो गाव की हमजोलिया
मफलूक[2] दहका-जादिया[3]
जो दस्ते-फर्ते-याम से[3]
और यूरशे-इफ्लास से[4]
इस्मत लुटाकर रह गई
खुद को गवा कर रह गई
गमगी जवानी बन गई
रुसवा[6] कहानी बन गई
उनसे कभी गलियो मे अब
होता हू मैं दोचार जब
नजरे झुका लेता हू मैं
खुद को छुपा लेता हू मैं

कितनी हजी है जिन्दगी
अदोह-गी है जिन्दगी

---

१ अधेरो मे २ निधन ३ किसानो की बेटिया ४ निराशा की अधिकता (के हाथ) से ५ गरीबी के आक्रमण से ६ बदनाम

यकसूई[1]

अह्दे-गुमगश्ता की तस्वीर दिखाती क्यो हो
एक आवारा ए-मंजिल को[2] सताती क्यो हो
वो हसी अहद[3] जो शर्मिदा ए-ईफा न हुआ[4]
उस हसी अहद का मफहूम जताती क्यो हो
जिन्दगी शो'ला-ए-बेबाक[5] बना लो अपनी
खुद को खाकिस्तरे-खामोश[6] बनाती क्यो हो
मै तसव्वुफ[7] के मराहिल का[8] नही हू कायल[9]
मेरी तस्वीर पे तुम फूल चढाती क्यो हो
कौन कहता है कि आहे है मसाइब का[10] इलाज
जान को अपनी अबस[11] रोग लगाती क्यो हो
एक सरकश से[12] मोहब्बत की तमन्ना रखकर
खुद को आईन के[13] फदे मे फसाती क्यो हो
मै समझता हू तकद्दुस[14] को तमद्दुन[15] का फरेब
तुम रसूमात को[16] ईमान बनाती क्यो हो
जब तुम्हे मुझसे जियादा है जमाने का खयाल
फिर मेरी याद मे यू अश्क[17] बहाती क्यो हो

तुम मे हिम्मत है तो दुनिया से बगावत कर दो
वर्ना मा बाप जहा कहते है शादी कर लो

---

१ तन्मयता २ जिसकी कोई मंजिल न हो ३ प्रण ४ जो पूरा न हुआ ५ धृष्ट शोला ६ मौन राख ७ सूफीवाद ८ मंज़िलो का ९ अनुयायी १० विपदाओ का ११ व्यर्थ १२ उद्दण्ड से १३ कानून के १४ पवित्रता १५ सभ्यता १६ रीति रिवाजो को १७ आसू

बात करें

सजा का हाल सुनाएँ, जजा[1] की बात करें
खुदा मिला हो जिन्हें, वो खुदा की बात करें

उन्हें पता भी चले और वो खफा भी न हों
इस एहतियात[2] से क्या, मुद्दआ[3] की बात करें

हमारे अहद की तहजीब में कबा[4] ही नहीं
अगर कबा हो तो बन्दे-कबा की[5] बात करें

हर एक दौर का मजहब नया खुदा लाया
करें तो हम भी मगर, किस खुदा की बात करें

वफा-शिआर[6] कई हैं, कोई हसीं भी तो हो
चलो फिर आज उसी बेवफा की बात करें

---

१ प्रत्युपकार २ सावधानी ३ उद्देश्य ४ चुगा ५ चुग के
। द (तस्मे) की ६ जिनकी प्रकृति मे वफा है

सदियो से

सदियो से इन्सान ये सुनता आया है
दुख की धूप के आगे, सुख का साया है

हमको इन सस्ती खुशियो का लोभ न दो
हमने सोच समझकर गम अपनाया है

झूट तो कातिल ठहरा इसका क्या रोना
सच ने भी इन्सान का खून बहाया है

पैदाइश के दिन से मौत की जद[1] मे है
इस मक्तल[2] मे कौन हमे ले आया है

अव्वल-अव्वल जिसने दिल बर्बाद किया
आखिर-आखिर वो दिल ही काम आया है

उतने दिन एहसान किया दीवानो पर
जितने दिन लोगो ने साथ निभाया है

१ जकड़ २ वध स्थान

देखा है जिन्दगी को

देखा है जिन्दगी को कुछ इतना करीब से
चेहरे तमाम लगने लगे हैं अजीब से

ऐ रूहे-अस्र[1] जाग, कहा सो रही है तू
आवाज दे रहे ह पैयम्बर[2] सलीब[3] से

इस रेंगती हयात[4] का कब तक उठाए बार[5]
बीमार अब उलझने लगे हैं तबीब[6] से

हर गाम[7] पर है मजमए-उश्शाक[8] मुंतजिर[9]
मक्तल की राह मिलती है कूए-हबीब[10] से

इस तरह जिन्दगी ने दिया है हमारा साथ
जैसे कोई निबाह रहा हो रकीब[11] से

---

१ युग की आत्मा २ धर्मोपदेशक ३ सूली ४ जिन्दगी
५ बोझ ६ वैद्य ७ पग कदम, ८ प्रेमी समुदाय ९ प्रतीक्षा म
१० प्रीतम की गली ११ प्रेयसी का दूसरा प्रेमी प्रतिद्व द्वी

अहले-दिल और भी है।

अहले-दिल[1] और भी है, अहले-वफा[2] और भी है
एक हम ही नही, दुनिया से खफा[3] और भी है

हम पे ही खत्म नही मस्लके-शोरोदा-सरी[4]
चाक-दिल[5] और भी है, चाक-कबा[6] और भी है

क्या हुआ गर मिरे यारो की जबाने चुप है
मेरे शाहिद,[7] मिरे यारो के सिवा और भी है

सर सलामत है तो क्या सगे-मलामत[8] की कमी
जान बाकी है तो पैकाने-कजा[9] और भी है

मुन्सिफे शहर की[10] वहदत[11] पे न हर्फ[12] आ जाए
लोग कहते है कि अर्बाबे-जफा[13] और भी है

---

१ दिल वाल २ वफा करने वाले ३ नाराज ४ पागलपन का पथ ५ फट (टूटे) दिलवाले ६ फटे चोले वाले ७ साक्षी, गवाह ८ दुत्कार के लिए मारा गया पत्थर ९ मौत के तीर १० नगर के न्यायाधीश की ११ निष्पक्षता १२ आच १३ कष्ट देन वाले

खून फिर खून है।

"एक मक्तूल[1] लूमम्बा एक जिन्दा लूमम्बा से कहीं जियादा ताकतवर होता है।"

—जवाहरलाल नेहरू

जुल्म फिर जुल्म है, बढ़ता है तो मिट जाता है
खून फिर खून है टपकेगा तो जम जाएगा

खाके-सहरा[2] पे जमे, या कफ़े-कातिल[3] पे जमे
फ़र्क़े इन्साफ़[4] पे या पाए-सलासिल[5] पे जमे
तेग़े-बेदाद[6] पे, या लाशए-बिस्मिल[7] पे जमे
खून फिर खून है टपकेगा तो जम जाएगा

लाख बैठे कोई छुप छुपके कमीगाहों[8] में
खून खुद देता है जल्लादों के[9]मस्कन का[10] सुराग़[11]
साजिशें[12] लाख उढाती रहें जुल्मत की[13] नकाब
लेके हर बून्द निकलती है हथेली पे चिराग़

१ कत्ल हुआ २ मरुस्थल की रेत ३ हत्यारे की हथेली ४ न्याय के सिर ५ बेड़ियों के पैरों पर ६ अन्याय की तलवार ७ तड़पती हुई देह पर ८ वह स्थान जहां से छुपकर वार किया जाता है ९ कसाइयों के १० ठिकाने का ११ पता १२ षड्यन्त्र १३ अंधेरे की

जुल्म की किस्मते-नाकारा-ओ-रुस्वा[1] से कहो
जब्र[2] की हिकमते-पुरकार के ईमा[3] से कहो
महमिले-मजलिसे-अकवाम की लैला[4] से कहो
खून दीवाना है दामन पे लपक सकता है
शो'लए-तुद[5] है, खिरमन[6] पे लपक सकता है

तुमने जिस खून को मक्तल मे[7] मे दबाना चाहा
आज वह कूचा ओ-बाजार मे आ निकला है
कही शो'ला, कही नारा, कही पत्थर बनकर

खून चलता है तो रुकता नही सगीनो से
सर उठाता है तो दबता नही आईनो[8] से

जुल्म की बात ही क्या, जुल्म की औकात[9] ही क्या
जुल्म बस जुल्म है आगाज से अजाम तलक[10]
खून फिर खून है, सौ शक्ल बदल सकता है—
ऐसी शक्ले कि मिटाओ तो मिटाए न बने
ऐसे शो'ले कि बुझाओ तो बुझाए न बने
ऐसे नारे कि दबाए तो दबाए न बने!

---

१ व्यथ और अपमानित भाग्य २ क्रूरता ३ चतुरतापूर्ण उपाय के सकेत ४ सयुक्त राष्ट सघ रूपी महमिल (ऊट के कचावे) मे बैठी लैला ५ भीषण ज्वाला ६ खलियान ७ वध स्थल मे ८ विधान, कानूनो ९ महत्त्व १० आरम्भ से अन्त तक

एक मुलाकात

तिरी तडप से न तडपा था मेरा दिल, लेकिन
तिरे सुकून[1] से बेचैन हो गया हू मैं
ये जान कर तुझे जाने कितना गम पहुचे
कि आज तेरे खयालो मे खो गया हू मैं

किसी की हो के तू इस तरह मेरे घर आई
कि जैसे फिर कभी आए तो घर मिले न मिले
नजर उठाई, मगर ऐसी बेयकीनी[2] से
कि जिस तरह कोई पेशे-नजर[3] मिले न मिले
तू मुस्कराई, मगर मुस्करा के रुक सी गई
कि मुस्कराने से गम की खबर मिले न मिले
रुकी तो ऐसे, कि जैसे तिरी रियाजत[4] को
अब इस समर[5] से जियादा समर मिले न मिले
गई तो सोग मे डूबे कदम ये कह के गए
सफर है शर्त, शरीके-सफर[6] मिले न मिले

तिरी तडप से न तडपा था मेरा दिल, लेकिन
तिरे सुकून[1] से बेचैन हो गया हू मैं
ये जानकर तुझे क्या जाने कितना गम पहुचे
कि आज तेरे खयालो मे खो गया हू मैं

---

१ शान्ति २ अविश्वास ३ दृष्टि के सामने ४ साधना को ५ फल ६ सहयात्री, सहचर

आओ कि कोई ख्वाब बुने

आओ कि कोई ख्वाब बुने, कल के वास्ते
वर्ना ये रात, आज के संगीन दौर[1] की
डस लेगी जानो-दिल को कुछ ऐसे कि जानो दिल
ता-उम्र[2] फिर न कोई हसीं ख्वाब बुन सकें

गो हमसे भागती रही ये तेज-गाम[3] उम्र
ख्वाबों के आसरे पे कटी है तमाम उम्र

जुल्फों के ख्वाब, होंटों के ख्वाब, और बदन के ख्वाब
मेराजे-फन[4] के ख्वाब, कमाले-सुखन[5] के ख्वाब
तहज़ीबे-जिन्दगी[6] के, फरोगे-वतन[7] के ख्वाब
जिन्दां[8] के ख्वाब, कूचए-दारो-रसन[9] के ख्वाब

ये ख्वाब ही तो अपनी जवानी के पास थे
ये ख्वाब ही तो अपने अमल की असास[10] थे
ये ख्वाब मर गए हैं तो बेरंग है हयात
यूं है कि जैसे दस्ते-तहे संग[11] है हयात

आओ कि कोई ख्वाब बुनें कल के वास्ते
वर्ना ये रात आज के संगीन दौर की
डस लेगी जानो-दिल को कुछ ऐसे कि जानो दिल
ता-उम्र फिर न कोई हसीं ख्वाब बुन सकें

---

१ कठोर युग २ जीवन भर ३ तीव्र गति ४ कला की निपुणता ५ काव्य की परिपूर्णता ६ जीवन की सभ्यता ७ देश की उन्नति ८ कारागार ९ फांसी के मार्ग १० नींव ११ पत्थर के नीचे दबा हुआ हाथ

मिरे अहद के हसीनो !

वो सितारे जिनकी खातिर कई वेकरार सदिया[1]
मिरी तीरावख्त[2] दुनिया मे सितारावार[3] जागी
कभी रिफअतो पे[4] लपकी, कभी वसअतो से[5] उलझी
कभी सोगवार[6] सोई, कभी नग्मा-वार[7] जागी

वो वुलन्द-वाम[8] तारे, वो फलक - मकाम[9] तारे
जो निशान दे के अपना रहे वेनिशा हमेशा
वो हसी, वो नूर-जादे,[10] वो खला के शाहजादे[11]
जो हमारी किस्मतो पे रहे हुक्मरा[12] हमेशा

जिन्हे मुज्महिल[13] दिलो ने अवदी - पनाह[14] जाना
थके हार काफिलो ने जिन्हे खिज्रे-राह[15] जाना
जिन्हे कमसिनो ने[16] चाहा कि लपक के प्यार कर लें
जिन्हे महवशो ने[17] मागा कि गले का हार कर ल

जिन्हे आशिको ने चाहा कि फलक से[18] तोड लाए
किसी राह मे विछाए, किसी सेज पर सजाए
जिन्हे वुतगरो ने चाहा कि सनम[19] वना के पूजे
ये जो दूर के हसी है, इन्हे पास ला के पूज

---

१ व्याकुल शताब्दिया २ अभागी ३ तारा क समान ४ ऊचाइया पर ५ विशालताओ से ६ दुखी ७ गाती हुई ८ ऊचे ९ जो आकाश पर रहते है १० प्रकाश-पुञ्ज ११ अतरिक्ष के राजकुमार १२ राज्य करने वाले १३ थके हुए १४ स्थायी आश्रय १५ पथ प्रदर्शक १६ अल्प आयु वालो ने १७ चन्द्र वदन (सुन्दरिया) ने १८ आकाश से १९ मूर्ति

जिन्हे मुतरिबो ने[1] चाहा कि सदाओ मे पिरोलें
जिन्हे शायरो ने चाहा कि खयाल मे समो ले
जो हजार कोशिशो पर भी शुमार[2] मे न आए
कभी खाके-बे-बजाअत[3] के दियार[4] मे न आए
जो हमारी दस्तरस[5] से रहे दूर-दूर अब तक
हमे देखते रहे है जो बसद गुरूर[6] अब तक
मिरे अहद के हसीनो! वो नजर-नवाज[7] तारे
मिरा दौरे-इश्क-परवर[8] तुम्हे नज्र[9] दे रहा है
वो जुनू जो आबो-आतश[10] को असीर[11] कर चुका था
वो खला की वस्अतो से[12] भी खिराज[13] ले रहा है

मिरे साथ रहने वालो! मिरे बाद आने वालो
मिरे दौर का ये तोहफा तुम्हे साजगार आए[14]
कभी तुम खलासे गुजरो, किसी सीमतन[15] की खातिर
कभी तुमको दिल मे रखकर कोई गुलअजार[16] आए

(स्पुतनिक के आविष्कार पर)

---

१ गायको ने २ गणना ३ तुच्छ मिट्टी ४ देश, नगर ५ पहुच ६ अभिमानपूर्वक ७ दृष्टि को प्रिय ८ प्रेम को पालने वाला युग ९ भेंट १० जल और ज्वाला ११ बदी १२ अतरिक्ष की विशालताओ से १३ कर १४ रास आए १५ चन्द्र-वदन १६ फूलों जैसे कपोलो वाला या वाली

खूबसूरत मोड

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जाए हम दोनो

न मैं तुम से कोई उम्मीद रखू दिलनवाजी की
न तुम मेरी तरफ देखो गलत-अदाज नज़रो से
न मेरे दिल की धडकन लडखडाए मेरी बातो मे
न जाहिर हो तुम्हारी कश्मकश का राज नज़रो मे

तुम्हे भी कोई उलझन रोकती है पेश-कदमी से[1]
मुझे भी लोग कहते है कि ये जलवे पराए है
मिरे हमराह भी रुसवाईया है मेरे माजी की[2]
तुम्हारे साथ भी गुजरी हुई राता के साए है

तआरुफ[3] रोग हो जाए तो उसको भूलना बेहतर
तअल्लुक बोझ बन जाए तो उसको तोडना अच्छा
वो अफसाना[4] जिसे अजाम तक लाना न हो मुमकिन
उसे इक खूबसूरत मोड देकर छोडना अच्छा

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जाए हम दोनो

१ पहल करने से २ अतीत की ३ परिचय ४ कहानी

अब आए या न आए इधर, पूछते चलो
क्या चाहती है उनकी नजर, पूछते चलो

हम से अगर है तर्के-तअल्लुक[1], तो क्या हुआ
यारो ! कोई तो उन की खबर पूछते चलो

जो खुद को कह रहे है कि मजिल-शनास[2] है
उनको भी क्या खबर है, मगर पूछते चलो

किस मजिले-मुराद की जानिब रवा[3] है हम
ऐ रहरवाने - खाक - बसर[4], पूछते चलो

---

१ प्रणय विच्छेद २ मजिल के जानकार ३ गतिशील
४ मिट्टी मे रहने वाले पथिक (मनुष्य)

※※

जब कभी उन की तवज्जोह मे कमी पाई गई
अज-मरे - नौ दास्ताने-शौक[1] दुहराई गई

बिक गए जब तेरे लब, फिर तुझको क्या शिकवा अगर
जिन्दगानी बादा - ओ - सागर से बहलाई गई

ऐ गमे-दुनिया तुझे क्या इल्म तेरे वास्ते
किन बहानो से तबीयत राह पर लाई गई

हम करें तर्के-वफा[2], अच्छा चलो यू ही सही
और अगर तर्के-वफा से भी न रुसवाई गई?

कैसे-कैसे चश्मो-आरिज़[3] गर्दे-गम से[4] बुझ गए
कैसे-कैसे पैकरो की[5] शाने-जेबाई[6] गई

दिल की धड़कन मे तवाजुन[7] आ चला है, खैर हो
मेरी नजरें बुझ गई गई या तेरी रानाई[8] गई

उनका गम, उनका तसव्वुर[9] उनके शिकवे अब कहा?
अब तो ये बाते भी ऐ दिल ! हो गई आई-गई

---

१ प्रेम-कथा २ प्रणय त्याग ३ आखें और कपोल
४ गम की धूल से ५ शरीरो की ६ सज्जा की शान
७ सतुलन ८ लावण्यता ९ कल्पना

※※

देखा तो था यूही किसी गफलत-शिआर[1] ने
दीवाना कर दिया दिले - बेइख्तियार ने

ऐ आर्जू के धुंदले ख्वाबो ! जवाब दो
फिर किसकी याद आई थी मुझको पुकारने?

तुमको खबर नही मगर इक सादालौह[2] को
बर्बाद कर दिया तिरे दो दिन के प्यार ने

मैं और तुमसे तर्के - मोहब्बत की[3] आर्जू
दीवाना कर दिया है गमे - रोजगार[4] ने

अब ऐ दिले - तबाह ! तिरा क्या ख्याल है
हम तो चले थे काकुले - गेती[5] सवारने

१ लापरवाही जिसका स्वभाव हो २ सरल स्वभाव ३ प्रणय त्याग की ४ सासारिक दुखो ने ५ ससार के केश

※※

मोहब्बत तर्क की मैंने, गरेबा सी लिया मैंने
जमाने अब तो खुश हो, जह्‌र ये भी पी लिया मैंने

अभी जिन्दा हू लेकिन सोचता रहता हू खल्वत[1] मे
कि अब तक किस तमन्ना के सहारे जी लिया मैंने

उन्हे अपना नही सकता मगर इतना भी क्या कम है
कि कुछ मुद्दत हसी ख्वाबो मे खोकर जी लिया मैंने

बस अब तो दामने-दिल छोड दो बेकार उमीदो
बहुत दुख सह लिए मैंने, बहुत दिन जी लिया मैंने

---

१ एकात

**

अकायद[1] वहम हैं मज़हब ख़याले-ख़ाम है साकी
अजल से[2] जेहने-इन्सा[3] बस्तए-औहाम[4] है साकी

हकीकत-आशनाई[5], अस्ल मे गुमकर्दा-राही[6] है
उरूसे-आगही[7] परवर्दए-अवहाम[8] है साकी

मुबारक हो जओफी[9] को खिरद[10] की फलसफादानी
जवानी बेनियाजे-इब्रते-अजाम[11] है साकी

अभी तक रास्ते के पेचो ख़म से दिल धड़कता है
मिरा जौके-तलब[12] शायद अभी तक ख़ाम[13] है साकी

वहा भेजा गया हू चाक करने पर्दा-ए शब को[14]
जहा हर सुबह के दामन पे अक्से-शाम[15] है साकी

---

१ मान्यताए २ अनादि काल से ३ मनुष्य का मस्तिष्क ४ भ्रमग्रस्त ५ ज्ञानोदय ६ पथ विभ्रमता ७ ज्ञान-रूपी दुल्हन ८ सदिग्धता की पली हुई ९ बुढ़ापे १० बुद्धि ११ परिणाम के भय से निश्चिन्त १२ पाने की अभिरुचि १३ अपक्व १४ रात के पर्दे को १५ सध्या की प्रतिच्छाया

**

तग आ चुके है कश्मकशे-जिंदगी से हम
ठुकरा न दे जहा को कही वेदिली से हम

मायूसी-ए-मआले-मोहव्वत[1] न पूछिए
अपनो से पेश आए है वेगानगी से हम

लो आज हमने तोड दिया रिश्तए-उमीद[2]
लो अब कभी गिला न करेंगे किसी से हम

उभरेंगे एक बार अभी दिल के वलवले
गो दब गए है वारे गमे-जिन्दगी से[3] हम

गर जिन्दगी मे मिल गए फिर इत्तिफाक से
पूछेंगे अपना हाल तिरी वेवसी से हम

अल्लाह रे फरेवे-मशीयत[4] कि आज तक
दुनिया के जुल्म सहते रहे खामुशी से हम

---

१ प्रेम के परिणाम की निराशा २ आशा का सम्बन्ध
३ जीवन की चिंताओ के बोझ से ४ दवेच्छा की प्रवचना

⁂

खुद्दारियों के खून को अर्जां[1] न कर सके
हम अपने जौहरों को नुमाया न कर सके

होकर खराबे-मय[2] तिरे गम तो भुला दिए
लेकिन गमे-हयात का[3] दर्मा[4] न कर सके

टूटा तलिस्मे अहदे-मोहब्बत[5] कुछ इस तरह
फिर आर्जू की शम्अ फुरोजा न कर सके[6]

हर शै करीब आके कशिश अपनी खो गई
वो भी इलाजे-शौके-गुरेज़ा[7] न कर सके

किस दर्जा दिलशिकन[8] थे मोहब्बत के हादिसे
हम जिन्दगी में फिर कोई अर्मां न कर सके

मायूसियों ने छीन लिए दिल के वलवले
वो भी नशाते-रूह का[9] सामां न कर सके

---

१ सस्ता २ शराब के हाथों खराब होकर ३ जीवन की चिंता का ४ इलाज ५ प्रेम काल का जादू ६ जला न सके ७ विमुख प्रेम का इलाज ८ हृदय भंजक ९ आत्मा की तृप्ति, हर्ष का

******

हवस-नसीब[1] नजर को कही करार[2] नही
मैं मुन्तजिर हू, मगर तेरा इन्तिजार नही

हमी से रगे-गुलिस्ता, हमी से रगे-बहार
हमी को नज्मे-गुलिस्ता[3] पे इख्तियार नही

अभी न छेड मोहब्बत के गीत ऐ मुतरिब[4]
अभी हयात[5] का माहौल[6] खुशगवार नही

तुम्हारे अहदे-वफा[7] को मैं अहद क्या समझू
मुझे खुद अपनी मोहब्बत का एतिबार नही

न जाने कितने गिले[8] इसमे मुज्तरिब[9] है नदीम[10]
वो एक दिल जो किसी का गिला-गुजार नही

गुरेज़ का नही काइल हयात से[11], लेकिन
जो सच कहू तो मुझे मौत नागवार[12] नही

ये किस मकाम पे पहुचा दिया जमाने ने
कि अब हयात पे तेरा भी इख्तियार नही

---

१ लोलुपता प्रिय २ चैन ३ उद्यान की व्यवस्था ४ गायक ५ जीवन ६ वातावरण ७ प्रणय प्रतिज्ञा ८ शिकायतें ९ आकुल १० साथी ११ जीवन से भागने के पक्ष मे नही हू १२ अप्रिय

⁂

इस तरफ से गुजरे थे काफिले बहारो के
आज तक सुलगते हैं जख्म रहगुजारो के

खल्वतो के शैदाई[1] खल्वतो मे खुलते है
हम से पूछ कर देखो राज पर्दादारो के

पहले हस के मिलते है फिर नजर चुराते हैं
आशना-सिफत[2] है लोग अजनबी दियारो के[3]

तुमने सिर्फ चाहा है हमने छू के देखे है
पैरहन[4] घटाओ के, जिस्म बर्क-पारो के[5]

शग्ले-मयपरस्ती[6] गो जश्ने-नामुरादी है
यू भी कट गए कुछ दिन तेरे सोगवारो[7] के

---

१ एकाता के रसिया २ परिचितजनो जैसे स्वभाव वाले
३ नगरो के ४ लिबास ५ बिजली के टुकडो (सुन्दरियो) के
६ मदिरापान द्वारा मनबहलाव ७ सोगियो के

गीत[1]

वो सुबह कभी तो आएगी
इन काली सदियो के सर से जब रात का आचल ढलकेगा
जब दुख के बादल पिघलेंगे जब सुख का सागर छलकेगा
जब अम्बर झूम के नाचेगा, जब धरती नग्मे गाएगी
वो सुबह कभी तो आएगी

जिस सुबह की खातिर जुग-जुग से हम सब मर मर कर जीते है
जिस सुबह के अमृत की धुन मे हम जहर के प्याले पीते है
इन भूखी प्यासी रूहो पर इक दिन तो करम फर्माएगी
वो सुबह कभी तो आएगी

माना कि अभी तेरे मेरे अर्मानो की कीमत कुछ भी नही
मिट्टी का भी है कुछ मोल मगर इन्सानो की कीमत कुछ भी नही
इन्सानो की इज्जत जब झूठे सिक्को मे न तोली जाएगी
वो सुबह कभी तो आएगी

दौलत के लिए जब औरत की इस्मत को न बेचा जाएगा
चाहत को न कुचला जाएगा, गैरत को न बेचा जाएगा
अपनी काली करतूतो पर जब ये दुनिया शर्माएगी
वो सुबह कभी तो आएगी

---

१ साहिर के सैकडो फिल्मी गीतो मे से यहा केवल कुछ गीत दिए जा रहे हैं। गीतो के रूप मे भारतीय फिल्म जगत् को 'साहिर' की देन कभी नही भुलाई जा सकती। ये 'साहिर' ही था जिसने पहली बार फिल्मी गीतो को अर्थहीन तुकबन्दियो से निकालकर चुस्त स्वस्थ तथा सार्थक गीतो का रूप प्रदान किया।

(२)

वो सुबह हमी से आएगी
जब धरती करवट बदलेगी, जब कैद से कैदी छूटेगे
जब पाप-घरौदे फूटेगे, जब जुल्म के बन्धन टूटगे
उस सुबह को हम ही लाएगे, वो सुबह हमी से आएगी
वो सुबह हमी से आएगी

मनहूस समाजी ढाचो मे जब जुर्म न पाले जाएगे
जब हाथ न काटे जाएगे जब सर न उछाले जाएगे
जेलो के बिना जब दुनिया की सरकार चलाई जाएगी
वो सुबह हमी से आएगी

ससार के सारे मेहनतकश, खेतो से, मिलो से निकलेगे
बेघर, बेदर, बेबस इन्सा, तारीक बिलो से निकलेगे
दुनिया अम्न और खुशहाली के फूलो से सजाई जाएगी
वो सुबह हमी से आएगी

※※

आख खुलते ही तुम छुप गए हो कहा
—तुम अभी थे यहा

मेरे पहलू मे तारो ने देखा तुम्हे
भीगे - भीगे नजारो ने देखा तुम्हे
तुमको देखा किए ये जमी आस्मा
—तुम अभी थे यहा

अभी सासो की खुश्बू हवाओ मे है
अभी कदमो की आहट फजाओ मे है
अभी शाखो पे है उगलियो के निशा
—तुम अभी थे यहा

तुम जुदा हो के भी मेरी राहो मे हो
गम अश्को मे[1] हो, सद आहो मे हो
चादनी मे झलकती हे परछाइया
—तुम अभी थे यहा

---

१ आसुओ में

※※

मैंने चाद और सितारो की तमन्ना की थी।
मुझको रातो की सियाही के सिवा कुछ न मिला।

मै वो नग्मा हू जिसे प्यार की महफिल न मि
वो मुसाफिर हू जिसे कोई भी मजिल न मि

जख्म पाए है, बहारो की तमन्ना की
मैंने चाद और सितारो की तमन्ना की

किसी गेसू[1], किसी आचल का सहारा भी नही
रास्ते मे कोई धुदला-सा सितारा भी नही

मेरी नजरो ने नजारो की तमन्ना की थी
मैंने चाद ओर सितारो की तमन्ना की थी

दिल मे नाकाम उमीदो के बसेरे पा
रोशनी लेने को निकला तो अधेरे पा

रग और नूर के धारो की तमन्ना की थ
मैंने चाद और सितारो की तमन्ना की थ

---

१ केश राशि

मैंने चाद और सितारो की तमन्ना की थी
मुझको रातो की सियाही के सिवा कुछ न मिला

मेरी राहो से जुदा हो गईं राहे उनकी
आज वदली नज़र आती है निगाहे उनकी

जिनसे इस दिल ने सहारो की तमन्ना को थी
मैंने चाद और सितारो की तमन्ना की थी

प्यार मागा तो सिसकते हुए अर्मान मिले
चैन चाहा तो उमडते हुए। तूफान मिले

डूबते दिल ने किनारो की तमन्ना की थी
मैंने चाद और सितारो की तमन्ना की थी

❋❋

जीवन के सफर मे राही
मिलते हैं बिछुड जाने को
और दे जाते है यादें
तन्हाई मे तडपाने को

रो-रो के इन्ही राहो मे खोना पडा इक अपने को
हम हस के इन्ही राहो मे अपनाया था 'बेगाने' को

अब साथ न गुजरेंगे हम, लेकिन ये फिज़ा वादी की
दोहराती रहेगी बरसो, भूले हुए अफसाने को

तुम अपनी नई दुनिया मे, खो जाओ पराए बनकर
जी पाए तो हम जी लेंगे, मरने की सजा पाने को

**

तुमने कितने सपने देखे, मैंने कितने गीत बुने ?
इस दुनिया के शोर मे लेकिन दिल की धड़कन कौन सुने ?

सरगम की आवाज पे सर को धुनने वाले लाखो पाए
नग्मो की खिलती कलियो को चुनने वाले लाखो पाए

राख हुआ दिल जिनमे जलकर वो अगारे कौन चुने
तुमने कितने सपने देखे, मैंने कितने गीत बुने ?

अर्मानो के सूने घर मे हर आहट बेगानी निकली
दिल ने जब नजदीक से देखा, हर सूरत अनजानी निकली

बोझल घड़िया गिनने-गिनते, सदमे हो गए लाख गुने
तुमने कितने सपने देखे, मैंने कितने गीत बुने ?

※※

आज सजन मोहे अग लगा लो, जनम सफल हो जाए
हृदय की पीडा, देह की अगनी, सब शीतल हो जाए

किए लाख जतन
मेरे मन की तपन, मोरे तन की जलन नही जाए
कैसी लागी ये लगन
कैसी जागी ये अगन, जिया धीर धरन नही पाए
प्रेम सुधा इतनी बरसा दो, जग जल—थल हो जाए
आज सजन मोहे अग लगा लो जनम सफल हो जाए

कई जुगो से हैं जागे
मोरे नैन अभागे, कही जिया नही लागे बिन तोरे
सुख दीखे नही आगे
दुख पीछे-पीछे भागे, जग सूना-सूना लागे बिन तोरे

प्रेम सुधा इतनी बरसा दो, जग जल—थल हो जाए
आज सजन मोहे अग लगा लो, जनम सफल हो जाए

मोहे अपना बना लो, मोरी बाह पकड
मैं हू जन्म जन्म की दासी
मोरी प्यास बुझा दो, मनहर, गिरधर
मैं हू अतरघट तक प्यासी
प्रेम सुधा इतनी बरसा दो, जग जल-थल हो जाए
आज सजन मोहे अग लगा लो जनम सफल हो जाए

**

जाने वो कैसे लोग थे जिनके प्यार को प्यार मिला
हमने तो जब कलियां मांगी कांटों का हार मिला

खुशियों की मंजिल ढूंढी तो गम की गर्द मिली
चाहत के नग्मे चाहे तो आहें-सर्द मिलीं
दिल के बोझ को दूना कर गया, जो गमख्वार मिल

बिछुड़ गया हर साथी देकर पल दो पल का साथ
किस को फुर्सत है जो थामे दीवानों का हाथ
हमको अपना साया तक अक्सर बेज़ार मिल

इसको ही जीना कहते हैं तो यूं ही जी लेंगे
उफ न करेंगे लब सी लेंगे, आंसू पी लेंगे
गम से अब घबराना कैसा ? गम सौ बार मिल

जाने वो कैसे लोग थे जिनके प्यार को प्यार मिल

**

मैं जब भी अकेली होती हू तुम चुपके से आ जाते हो
और झाक के मेरी आखो मे बीते दिन याद दिलाते हो

मस्ताना हवा के झोको से हर बार वह पर्दे का हिलना
पर्दे को पकडने की धुन मे दो अजनबी हाथो का मिलना
आखो मे धुआ सा छा जाना, सासो मे सितारे से खिलना

रस्ते मे तुम्हारा मुड-मुडकर तकना वो मुझे जाते जाते
और मेरा ठिठकक्र रुक जाना चिलमन के करीब आते अपने
नजरो का तरस कर रह जाना इक और झलक पाते पाते

बालो को सुखाने की खातिर कोठे पे वो मेरा आ जाना
और तुमको मुकबिल पाते ही कुछ शर्माना कुछ बल खाना
हमसायो के डर से कतराना, घर वालो के डर से घबराना

रो-रो के तुम्हे खत लिखती हू और खुद पढकर रो लेती हू
हालात के तपते तूफा मे, जज्बात की कश्ती खेती हू
कैसे हो, कहा हो ? कुछ तो कहो, मैं तुमको सदाए देती हू
मैं जब भी अकेली होती हू—

**

तुम अगर मुझ को न चाहो तो कोई बात नही
तुम किसी और को चाहोगी तो मुश्किल होगी

> अब अगर मेल नही है तो जुदाई भी नह
> बात तोडी भी नही तुमने, बनाई भी नह
> ये सहारा भी बहुत है मेरे जीने के लि
> तुम अगर मेरी नही हो तो परायी भी नह

मेरे दिल को न सराहो तो कोई बात नही
गैर के दिल को सराहोगी तो मुश्किल होगी

> तुम हसी हो, तुम्हे सब प्यार ही करते हो
> मै जो मरता हू तो क्या और भी मरते हो
> सब की आखो मे इसी शौक का तूफा होग
> सब के सीने मे यही दद उभरते हो

मेरे गम मे न कराहो तो कोई बात नही
और के गम मे कराहोगी तो मुश्किल होगी

> फूल की तरह हसो सब की निगाहो मे रह
> अपनी मासूम जवानी की पनाहो मे रह
> मुझ को वो दिन न दिखाना तुम्हे अपनो ही कसम
> मै तरसता रहू तुम गैर की बाहो मे रह

तुम जो मुझसे न निबाहो तो कोई बात नही
किसी दुश्मन से निबाहोगी तो मुश्किल होगी

**

ऐ दिल जबा न खोल, सिफ देख ले
किसी से कुछ न बोल, सिफ देख ले

ये हसीन जगमगाहटें
आचलो की सरसराहटें

ये नशे मे झूमती जमी
सब के पाव चूमती जमी

किस कदर है गोल, सिफ देख ले
ऐ दिल जबा न खोल, सिर्फ देख ले

कितना सच है, कितना झूट है
कितना हक है कितनी लूट है
रख सभी की लाज, कुछ न कह
क्या है ये समाज, कुछ न कह

ढोल का ये पोल, सिफ देख ले
ऐ दिल जबा न खोल, सिफ देख ले

मान ले जहा की बात को
दिन समझ ले काली रात को
चलने दे युही ये सिलसिला
ये न बोल, किसको क्या मिला

तराजुओ का झोल, सिफ देख ले
ऐ दिल जबा न खोल सिफ देख ले

**

दो बूंदें सावन की—
इक सागर की सीप मे टपके और मोती बन जाए
दूजी गदे जल मे गिरकर अपना आप गवाए
किसको मुजरिम समझे कोई, किसको दोष लगाए
—दो बूंदें सावन की

दो कलियां गुलशन की—
इक सेहरे के बीच गुधे और मन ही मन इतराए
इक अर्थी की भेंट चढे और धूली मे मिल जाए
किसको मुजरिम समझे कोई, किसको दोष लगाए
—दो कलियां गुलशन की

दो सखियां बचपन की—
इक सिंहासन पर बैठे और रूपमती कहलाए
दूजी अपने रूप के कारण गलियो मे बिक जाए
किसको मुजरिम समझे कोई, किसको दोष लगाए
—दो सखियां बचपन की

**

जिन्दगी भर नही भूलेगी वो बरसात की रात
एक अनजान हसीना से मुलाकात की रात

हाय वो रेशमी जुल्फो से बरसता पानी
फूल से गालो पे रुकने को तरसता पानी

दिल मे तूफान उठाते हुए जज्बात की रात
जिन्दगी भर नही भूलेगी वो बरसात की रात

डर के बिजली से अचानक ये लिपटना उसका
और फिर शर्म से बल खा के सिमटना उसका

कभी देखी न सुनी ऐसी तिलस्मात की रात
जिन्दगी भर नही भूलेगी वो बरसात की रात

सुर्ख आचल को दबाकर जो निचोडा उसने
दिल पे जलता हुआ इक तीर सा छोडा उसने

आग पानी मे लगाते हुए लम्हात की रात
जिन्दगी भर नही भूलेगी वो बरसात की रात

मेरे नग्मो मे जो बसती है वो तस्वीर थी वो
नौजवानी की हसी ख्वाब की ताबीर थी वो

आस्मानो से उतर आई थी जो रात की रात
जिन्दगी भर नही भूलेगी वो बरसात की रात

※※

महफिल से उठ जाने वालो, तुम लोगों पर क्या इल्ज़ाम
तुम आबाद घरों के वासो, मैं आवारा और बदनाम
मेरे साथी खाली जाम !

दो दिन तुमने प्यार जताया, दो दिन तुमसे मेल रहा
अच्छा-खासा वक्त कटा और अच्छा-खासा खेल रहा
अब उस खेल का जिक्र ही क्या, वक्त कटा और खेल तमाम
मेरे साथी खाली जाम !

तुमने ढूंडी सुख की दौलत, मैंने पाला गम का रोग
कैसे बनता, कैसे निभता, ये रिश्ता और ये सजोग
मैंने दिल को दिल से तोला, तुमने मागे प्यार के दाम
मेरे साथी खाली जाम !

तुम दुनिया को बेहतर समझे, मैं पागल था ख्वार हुआ
तुमको अपनाने निकला था, खुद से भी बेजार हुआ
देख लिया घर फूंक तमाशा, जान लिया मैंने अंजाम
मेरे साथी खाली जाम !

※※

रात के राही थक मत जाना, सुबह की मंज़िल दूर नही

धरती के फैले आगन मे पल दो पल है रात का डेरा
ज़ुल्म का सीना चीर के देखो झाक रहा है नया सवेरा
ढलता दिन मजबूर सही, चढ़ता सूरज मजबूर नही
रात के राही

सदियो तक चुप रहने वाले, अब अपना हक लेके रहगे
जो करना है खुल के करेंगे, जो कहना है साफ कहगे
जीते जी घुट-घुटकर मरना, इस युग का दस्तूर नही
रात के राही

टूटेगी बोझिल जंजीरे, जागेंगी सोई तक्दीरें
लूट पे कब तक पहरा देगी, ज़ग लगी खूनी शमशीरें ?
रह नही सकता इस दुनिया मे, जो सबको मंजूर नही

रात के राही थक मत जाना, सुबह की मंज़िल दूर नही

**

साथी हाथ बढाना—
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना
—साथी हाथ बढाना

हम मेहनत वालो ने जब भी मिलकर कदम बढाया
सागर ने रस्ता छोडा, परबत ने सीस झुकाया
फौलादी है सीने अपने, फौलादी है बाहे
हम चाहे तो पैदा कर दें चट्टानो मे राहे
—साथी हाथ बढाना

मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना
कल गैरो की खातिर की, आज अपनी खातिर करना
अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक
अपनी मजिल सच की मजिल, अपना रास्ता नेक
– साथी हाथ बढाना

एक से एक मिले तो कतरा बन जाता है दर्या
एक से एक मिले तो जर्रा बन जाता है सहरा
एक से एक मिले तो राई बन सकती है परबत
एक से एक मिले तो इन्सा बस मे कर ले किस्मत
—साथी हाथ बढाना

माटी से हम लाल निकाले, मोती लाए जल से
जो कुछ इस दुनिया मे बना है, बना हमारे बल से
कब तक मेहनत के पैरो मे दौलत की जजीरें?
हाथ बढाकर छीन लो अपने ख्वाबो की ताबीरें[1]

—साथी हाथ बढाना

---

१ स्वप्न फल

**

मौत कभी भी मिल सकती है, लेकिन जीवन कल न मिलेगा
मरने वाले! सोच समझ ले, फिर तुझको ये पल न मिलेगा

कौन-सा ऐसा दिल है जहा मे जिसको गम का रोग नही
कौन सा ऐसा घर है कि जिसमे सुख ही सुख हे सोग नही

जो हल दुनिया भर को मिला है क्यो तुझको वो हल न मिलेगा
मरने वाले! सोच समझ ले, फिर तुझको ये पल न मिलेगा

इस जीवन मे कितने ही दुख हो लेकिन सुख की आस तो है
दिल मे कोई अर्मा तो बसा है, आख मे कोई प्यास तो है

जीवन ने ये फल तो दिया है मौत से ये भी फल न मिलेगा
मरने वाले! सोच-समझ ले, फिर तुझको ये पल न निलेगा

✻✻

इन उजले महलो के तले
हम गदी गलियो मे पले

सौ सौ बोझे मन पे लिए
मैल और माटी तन पे लिए

दुख सहते गम खाते रहे
फिर भी हसते गाते रहे

हम दीपक तूफा मे जले
हम गन्दी गलियो मे पले

दुनिया ने ठुकराया हमे
रस्तो ने अपनाया हमे
सडकें मा, सडके ही पिता
सडकें घर, सडकें ही चिता

क्यो आए क्या करके चले
हम गदी गलियो मे पले

दिल मे खटका कुछ भी नही
हमको परदा कुछ भी नही
चाहो तो नाकारा कहो
चाहो तो आवारा कहो

हम ही बुरे तुम सब हो भले
हम गन्दी गलियो मे पले

**

ये महलो, ये तख्तो, ये ताजो की दुनिया
ये इन्सा के दुश्मन समाजो की दुनिया
ये दौलत के भूखे रिवाजो की दुनिया
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है ।

हर एक जिस्म घायल, हर इक रूह प्यासी
निगाहो मे उलझन, दिलो मे उदासी
ये दुनिया है या आलमे-बदहवासी
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है ।

यहा इक खिलौना है इसा की हस्ती
ये बस्ती है मुर्दा-परस्तो की बस्ती
यहा पर तो जीवन से है मौत सस्ती
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है ।

जवानी भटकती है बदकार बनकर
जवा जिस्म सजते है बाजार बनकर
यहा प्यार होता है व्योपार बनकर
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है ।

ये दुनिया, जहा आदमी कुछ नही है
वफा कुछ नही, दोस्ती कुछ नही है
जहा प्यार की कद्र ही कुछ नही है
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है ।

जला दो इसे फूक डालो ये दुनिया
मिरे सामने से हटा लो ये दुनिया
तुम्हारी है तुम ही सभालो ये दुनिया
ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है !

❋❋

औरत ने जनम दिया मर्दों को, मर्दों ने उसे बाजार दिया।
जब जी चाहा मसला-कुचला, जब जी चाहा दुत्कार दिया

तुलती है कही दोनारो मे, बिकती है कही बाजारो मे
नगी नचवाई जाती है ऐयाशो के दरबारो मे
ये वो बेइज्ज़त चीज़ है जो बट जाती है इज्जतदारो मे

मर्दों के लिए हर जुल्म रवा, औरत के लिए रोना भी खता
मर्दों के लिए लाखो सेजें, औरत के लिए बस एक चिता
मर्दों के लिए हर ऐश का हक,औरत के लिए जीना भी सजा

जिन सीनो ने इनको दूध दिया,
उन सीनो का व्योपार किया

जिस कोख मे इनका जिस्म ढला,
उस कोख का कारोबार किया
जिस तन मे उगे कोपल बनकर,
उस तन को ज़लीलो-ख्वार किया

मर्दों ने बनाई जो रस्मे, उनको हक का फर्मान कहा
औरत के जिन्दा जलने को कुर्बानी और बलिदान कहा
इस्मत के बदले रोटी दी और उसको भी एहसान कहा

ससार की हर इक बेशर्मी, गुरबत की गोद मे पलती है
चकलो ही मे आकर रुकती है, फाको से जो राह निकलती है
मर्दों की हवस है जो अकसर औरत के पाप मे ढलती है

औरत ससार की किस्मत है फिर भी तकदीर की हेटी है
अवतार पैयम्बर जनती है फिर भी शैतान की बेटी है
ये वो बदकिस्मत मा है, जो बेटो की सेज पे लेटी है

औरत ने जन्म दिया मर्दों को, मर्दों ने उसे बाजार दिया
जब जी चाहा मसला-कुचला, जब जी चाहा दुत्कार दिया

※※

तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

अच्छा है अभी तक तेरा कुछ नाम नहीं है
तुझको किसी मजहब से कुछ काम नहीं है
जिस इल्म ने इन्सान को तक्सीम किया है
उस इल्म का तुझ पर कोई इल्जाम नहीं है

तू बदले हुए वक्त की पहचान बनेगा
इन्सान की औलाद है, इन्सान बनेगा

मालिक ने हर इन्सान को इन्सान बनाया
हमने उसे हिन्दू या मुसलमान बनाया
कुदरत ने तो बख्शी थी हमे एक ही धरती
हमने कही भारत, कही ईरान बनाया

जो तोड दे हर बद, वह तूफान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

नफरत जो सिखाए वो धर्म तेरा नही है
इन्सान को रौंदे वो कदम तेरा नही है
कुरान न हो जिसमे वो मंदिर नही तेरा
गीता न हो जिसमे वो हरम तेरा नही है

तू अम्न और सुलह का अर्मान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

ये दीन के ताजिर, ये वतन बेचने वाले
इन्सानों की लाशों के कफ़न बेचने वाले
ये महलों में बैठे हुए कातिल, ये लुटेरे
काटों के इवज रूहे-चमन बेचने वाले

तू उनके लिए मौत का सामान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

**

मैंने शायद तुम्हे पहले भी कभी देखा है ।

अजनबी-सी हो मगर गैर नही लगती हो
वहम से भी हो नाजुक वो यकी लगती हो
हाए ये फूल-सा चेहरा ये घनेरी जुल्फे
मेरे शे'रो से भी तुम मुझको हसी लगती हो

देखकर तुमको किसी रात की याद आती है
एक खामोश मुलाकात की याद आती है
जेह्न पे हुस्न की ठडक का असर जागता है
आच देती हुई बरसात की याद आती है

मेरी आखो पे झुकी रहती है पलके जिसकी
तुम वही मेरे ख्यालो की परी हो कि नही
कही पहले की तरह फिर तो न खो जाओगी
जो हमेशा के लिए हो, वो खुशी हो कि नही

मैंने शायद तुम्हे पहले भी कही देखा है ।

क़त'ए

तपते दिल पर यूं गिरती है
तेरी नज़र से प्यार की शबनम
जलते हुए जंगल पर जैसे
बरखा बरसे रुक-रुक, थम-थम

※

जहां-जहां तेरी नज़र की ओस टपकी थी
वहां-वहां से अभी तक गुबार उठता है
जहां-जहां तेरे जल्वों के फूल बिखरे थे
वहां-वहां दिले-वहशी पुकार उठता है

※

न मुंह छुपा के जिए हम, न सर झुका के जिए
सितमगरों की नज़र से नज़र मिला के जिए
अब एक रात अगर कम जिए, तो कम ही सही
यही बहुत है कि हम मश्अलें जला के जिए

शे'र

जिन्दगी को बेनियाज़े-आर्ज़ू[1] करना पड़ा
आह किन आंखों से अंजामे-तमन्ना[2] देखते

※

मुझे मालूम है अंजाम रूदादे-मोहब्बत का[3]
मगर कुछ और थोड़ी देर सअई ए-रायगां[4] कर लूं

※

अपनी तबाहियों का मुझे कोई गम नहीं
तुमने किसी के साथ मोहब्बत निबाह तो दी

※

हयात इक मुस्तकिल[5] गम के सिवा कुछ भी नहीं शायद
खुशी भी याद आती है, तो आंसू बन के आती है

※

निगाहें झुकते-झुकते भी बहम[6] टकरा ही जाती हैं
मोहब्बत छुपते-छुपते भी नुमायां होती जाती है

---

१ आकांक्षारहित २ प्रेमान्त ३ प्रेम कथा का ४ व्यर्थ प्रयत्न ५ स्थायी ६ परस्पर

इतने करीब आ के भी क्या जाने किस लिए
कुछ अजनबी से आप हैं कुछ अजनबी से हम

※

तुम मेरे लिए अब कोई इल्ज़ाम न ढूंडो
चाहा था तुम्हें, इक यही इल्ज़ाम बहुत है